NEXT IAS

आधुनिक भारत का इतिहास

सिविल सेवा परीक्षा 2027

MADE EASY PUBLICATIONS
द्वारा प्रकाशित

MADE EASY Publications Pvt. Ltd.
कॉर्पोरेट कार्यालय: 44-A/4, कालू सराय
(हौज़ ख़ास मेट्रो स्टेशन के निकट), नई दिल्ली-110016
संपर्क सूत्र: 011-45124660, 8860378007
ई-मेल करें: infomep@madeeasy.in
विजिट करें: www.madeeasypublications.org

आधुनिक भारत का इतिहास

© **कॉपीराइट: Made Easy Publications Pvt. Ltd.**

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, पुनर्मुद्रण, प्रस्तुतीकरण और किसी ऐसे यंत्र में संग्रहण नहीं किया जा सकता, जिससे इसकी पुनर्प्राप्ति की जा सकती हो अथवा इसका स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार) से उपर्युक्त उल्लिखित प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण: 2024
द्वितीय संस्करण: 2025
तृतीय संस्करण: 2026

विषयसूची

आधुनिक भारत का इतिहास

इकाई–I: सत्ता संघर्ष का एक युग

अध्याय 1

मुगल (Mughals) 2
1.1 मुग़ल साम्राज्य का उद्भव (Development of the Mughal Empire) 2
बाबर (Babur) 2
हुमायूँ (Humayun) 3
सूर साम्राज्य (Sur Empire) (1540-55) 3
अकबर (Akbar) 3
जहाँगीर (Jahangir) 5
शाहजहाँ (Shah Jahan) 5
औरंगज़ेब (Aurangzeb) 6
1.2 उत्तर मुग़ल काल (Later Mughals) 6
बहादुर शाह-1 (Bahadur Shah-I) 6
जहाँदार शाह (Jahandar Shah) (1712-13) 6
फर्रुख़सियर (Farrukh Siyar) (1713-19) 6
सैयद बंधु (Saiyid Brothers) 6
मुहम्मद शाह (Muhammad Shah) 7
1.3 विदेशी आक्रमण (Foreign Invasions) 7
नादिरशाह का आक्रमण (Nadir Shah's Invasion) 7
अहमदशाह अब्दाली का आक्रमण (Ahmed Shah Abdali's Invasions) 7
1.4 विश्लेषण (Analysis) 8
मुग़ल साम्राज्य के पतन के कारण (Causes of Decline of Mughal Empire) 8
मुग़ल शासन के प्रभाव (Impact of the Mughal Rule) 8

अध्याय 2

क्षेत्रीय सत्ताओं का उदय (Rise of Regional Powers) 14
2.1 प्रस्तावना (Introduction) 14
2.2 उत्तराधिकारी राज्य (Successor States) 14
अवध (Awadh) 14
क्षेत्रीय सत्ताओं का उदय (Rise of Regional Powers) 14
स्थापत्य (Architecture) 17
बंगाल (Bengal) 17
हैदराबाद (Hyderabad) 20
2.3 नवीन राज्य (The New States) 22
पंजाब (Punjab) 22
मराठा (Marathas) 23
शिवाजी (Shivaji) 23
पेशवा बालाजी विश्वनाथ (Peshwa Balaji Vishwanath) 24
जाट राज्य (Jat State) 26
2.4 स्वतंत्र राज्य (Independent Kingdoms) 26
मैसूर (Mysore) 26
केरल (Kerala) 30
राजपूत राज्य (Rajput States) 31
2.5 निष्कर्ष (Conclusion) 33

अध्याय 3

यूरोपियों का आगमन (Advent of Europeans) 35
3.1 प्रस्तावना (Introduction) 35
3.2 नए व्यापारिक मार्गों की आवश्यकता (Need for New Trade Routes) 35
भौगोलिक कारण (Geographical Causes) 35
नौवहन (Technological Advancement) 35
यूरोपियों का आगमन (Advent of Europeans) 35
राजनीतिक कारण (Political Causes) 36
आर्थिक कारण (Economic Causes) 36
मनोवैज्ञानिक कारण (Psychological Causes) 37
धार्मिक कारण (Religious Causes) 37
3.3 पुर्तगाली (The Portuguese) 37
पुर्तगालियों का भारत में उदय (Portuguese Rise in India) 37
भारत में पुर्तगालियों का पतन (Portuguese Decline in India) 38
3.4 डच (The Dutch) 38
डचों का भारत में उदय (Dutch Rise in India) 38
डचों का भारत में पतन (Dutch Decline in India) 39
3.5 फ्रांसीसी (The French) 39
फ्रांसीसियों का भारत में उदय (French Rise in India) 39
भारत में फ्रांसीसियों का पतन (French Decline in India) 40

3.6 अंग्रेज़ (The British)........ 40
ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सफलता के कारण (Reasons for Success of British East India Company) 40

अध्याय 4

ब्रिटिश राज्य के उदय में बाधाएँ

(Obstacles to British Rise)........ 44
4.1 आंग्ल-फ़्रांसीसी संघर्ष (Anglo-French Conflict) 44
प्रस्तावना (Introduction) 44
प्रथम कर्नाटक युद्ध (First Carnatic War) (1746-48) . 44
ब्रिटिश राज्य के उदय में बाधाएँ (Obstacles to British Rise)........ 44
द्वितीय कर्नाटक युद्ध (Second Carnatic War) 1749–1754)........ 45
तृतीय कर्नाटक युद्ध (Third Carnatic War) (1758-763 bZloh)........ 46
आलोचनात्मक विश्लेषण (Critical Analysis)........ 46
4.2 आंग्ल-मैसूर युद्ध (Anglo-Mysore Wars) (1767-99) 47
परिचय (Introduction)........ 47
प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (First Anglo-Mysore War)ए 1767–69 ईसवी 48
द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (Second Anglo-Mysore War), 1780–84 48
तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (Third Anglo-Mysore War), 1790–92 49
चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (Fourth Anglo-Mysore War), 1798–99 50
4.3 आंग्ल-मराठा युद्ध (Anglo-Maratha Wars), 1775–1819 50
परिचय (Introduction)........ 50
प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (First Anglo-Maratha War), 1775–82 51
द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (Second Anglo-Maratha War), 1803–06........ 51
तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (Third Anglo-Maratha War), 1817–18........ 52
4.4 आंग्ल-सिक्ख संबंध (Anglo-Sikh Relations) 53
सिक्ख (The Sikhs)........ 53
रणजीत सिंह का उदय (Emergence of Ranjit Singh) 54
रणजीत सिंह की शासन व्यवस्था (Governance under Ranjit Singh)........ 54
धार्मिक नीति (Religious Policies)........ 54
प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध (First Anglo-Sikh War), 1845–46 54
द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध (Second Anglo-Sikh War), 1848–49 55

अध्याय 5

बंगाल में अंग्रेज़ी सत्ता का उदय

(Rise of British Power in Bengal)........ 58
5.1 प्रस्तावना (Introduction) 58
5.2 बंगाल (Bengal) 58
कारखाने एवं फरमान (Factories and Farmans)........ 58
बंगाल में तनाव (Tension in Bengal)........ 58
बंगाल में अंग्रेज़ी सत्ता का उदय (Rise of British Power in Bengal) 58
5.3 ब्लैक होल त्रासदी (Black Hole Tragedy) 59
5.4 प्लासी का युद्ध (Battle of Plassey) (1757) 59
परिचय (Introduction)........ 59
षडयंत्र (Conspiracy)........ 59
कारण (Causes)........ 59
घटनाक्रम (Events)........ 60
तात्कालिक परिणाम (Aftermath) 60
प्लासी का महत्त्व (Significance of Plassey) 60
5.5 मीर ज़ाफ़र (Mir Jafar) 60
5.6 मीर क़ासिम (Mir Qasim) 60
कलकत्ता कांउसिल के साथ संधि (Treaty with Calcutta Council), 1760........ 61
मीर क़ासिम एवं ईस्ट इंडिया कंपनी (Mir Qasim and East India Company) 61
विवाद जारी रहना (Conflict Continues)........ 61
5.7 बक्सर का युद्ध (Battle of Buxar) (1764) 61
कारण (Causes)........ 61
युद्ध का घटनाक्रम (Course of War) 61
तात्कालिक परिणाम (Aftermath) 61
इलाहाबाद की संधि (The Treaty of Allahabad)........ 62
बक्सर के युद्ध का महत्त्व (Significance of Battle of Buxar)........ 62
5.8 बंगाल में द्वैध शासन प्रणाली (Dual Government in Bengal) (1765-72) 62
द्वैध शासन (Dual Government) 62
द्वैध शासन लागू करने के कारण (Reasons for Implementation of Dual Government)........ 62
प्रभाव (Impact)........ 62
5.9 विश्लेषण: प्लासी का युद्ध एवं बक्सर का युद्ध (Analysis: Battle of Plassey and Battle of Buxar) 62
5.10 निष्कर्ष (Conclusion)........ 63

अध्याय 6

ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन काल में प्रशासन

(Administration during East India Company), 1757&1856 65
6.1 बंगाल में द्वैध शासन (Dual Administration in Bengal)........ 65

प्रस्तावना (Introduction) 65
परिणाम (Consequences) 65
द्वैध शासन की आलोचना
(Critiques of the Dual Administration)................. 65
ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन काल में प्रशासन
(Administration during East India
Company), 1757-1856 65
6.2 न्यायिक व्यवस्था (Judicial System)......................... 66
न्यायिक व्यवस्था/प्रणाली की आवश्यकता
(Need for a Judicial System) 66
न्यायिक प्रणाली का विकास
(Development of Judicial System)...................... 66
अवलोकन (An Overview) 68
आलोचनात्मक विश्लेषण (Critical Analysis)............... 68
6.3 भारतीय सिविल सेवा (Indian Civil Services) 68
प्रस्तावना (Introduction) 68
महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम (Important Events) 68
6.4 वाणिज्य और राजस्व: धन की निकासी (Finance and Revenue: Drain of Wealth)................................. 69
धन की निकासी: कारण
(Drain of Wealth: Factors).................................. 69
धन-निकासी: तंत्र (Drain of Wealth: Mechanism) 69
धन-निकासी: प्रभाव (Drain of Wealth: Impact) 69
धन-निकासी: सिद्धांत (Drain of Wealth: Theories) 70
6.5 भू-राजस्व नीति (Land Revenue Policy)................. 70
भू-राजस्व प्रणाली की आवश्यकता
(Need for a Land Revenue System) 70
स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement)................. 70
रैयतवाड़ी बंदोबस्त (Ryotwari Settlement)................. 71
महालवाड़ी बंदोबस्त (Mahalwari System) 72
6.6 कृषि का वाणिज्यीकरण (Commercialization of Agriculture) 72
कारण (Factors).. 72
प्रतिरूप (Pattern).. 72
विशेषताएँ (Features) 72
प्रभाव (Impact)... 73
6.7 भारत में विऔद्योगीकरण (De-industrilization of India) .. 73
कारण (Factors).. 73
प्रभाव (Impact)... 73
6.8 अकाल (Famines).. 73
अकाल के कारण (Causes of Famines) 74
6.9 यूरोपीय व्यावसायिक उपक्रम (European Business Enterprises)... 74
विशेषताएँ (Characteristics) 74
यातायात और संचार साधनों का विकास
(Development of Means of Transport and
Communication)... 74
उद्योगों का विकास (Development of Industries)...... 74

इकाई – II: भारत का जागरण

अध्याय 7

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन
(Socio-Religious Reform Movement)...............................78
7.1 परिचय (Introduction).. 78
7.2 सुधार आंदोलन (Reform Movements) 78
ब्रह्म समाज (Brahmo Samaj)................................. 78
सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन
(Socio-Religious Reform Movement) 78
युवा बंगाल आंदोलन (Young Bengal Movement) 80
प्रार्थना समाज (Prarthana Samaj)............................ 81
रामकृष्ण मिशन (Ramakrishna Mission).................. 81
आर्य समाज (Arya Samaj) 82
परमहंस मंडली (Paramhansa Mandalis)................. 82
सत्यशोधक समाज (Truth Seeker's Society) 83
ज्ञान प्रसारक मंडलियाँ (Gyan Prasarak Mandalis) 83
सर्वेंट्स ऑफ़ इंडिया सोसाइटी
(The Servants of India Society) 83
सामाजिक सेवा लीग (Social Service League).......... 83
सेवा सदन (Seva Sadan) 83
वेद समाज (Veda Samaj) 83
7.3 दार्शनिक आंदोलन (Philosophical Movements)........ 83
देव समाज (Deva Samaj)...................................... 83
राधा स्वामी आंदोलन (Radha Swami Movement) 84
7.4 दक्षिण भारत के आंदोलन (Movements in South India)... 84
श्री नारायण धर्म परिपालन आंदोलन (एस.एन.डी.पी.)
(Shri Narayana Dharma Paripalana
Movement - SNDP) 84
वोक्कालिग संघ (Vokkaligara Sangha).................... 84
जस्टिस आंदोलन (Justice Movement) 84
आत्म-सम्मान आंदोलन
(Self Respect Movement) 84
भारतीय सामाजिक सम्मेलन
(Indian Social Conference)................................. 84
भारतीय थियोसोफिकल सोसाइटी
(Theosophical Society of India).......................... 85
7.5 मुस्लिमों द्वारा किए गए आंदोलन (Movements by the Muslims)... 85
वहाबी/वलीउल्लाह आंदोलन
(Wahabi/Walliullah Movement) 85
अलीगढ़ आंदोलन (Aligarh Movement).................... 85
टीटू मीर का आंदोलन (Titu Mir's Movement)............ 86
फराज़ी विद्रोह (Faraizi Revolt)................................ 86
अहमदिया आंदोलन (Ahmadiyya Movement)............ 86

7.6 पारसी सुधार आंदोलन (Parsi Reform Movements) ... 86
रहनुमाई माज़दायासन सभा (Rahnumai Mazdayasnan Sabha) ... 86
7.7 सिक्ख सुधार आंदोलन (Sikh Reform Movement) ... 87
सिंह सभा आंदोलन (Singh Sabha Movement) ... 87
अकाली आंदोलन (Akali Movement) ... 87
7.8 रूढ़िवादी वर्ग द्वारा किए गए आंदोलन (Movements Organized by Orthodox Sections) ... 87
धर्म सभा (Dharma Sabha) ... 87
भारत धर्म महामंडल (Bharat Dharma Mahamandala) ... 87
देवबंद स्कूल (Deoband School) ... 87
7.9 सामाजिक धार्मिक-सुधारों का विश्लेषण (Analysis of the Socio-Religious Reform) ... 87
सकारात्मक प्रभाव (Positive Impact) ... 87
नकारात्मक प्रभाव (Negative Impact) ... 88
7.10 निष्कर्ष (Conclusion) ... 89

अध्याय 8

1857 का विद्रोह (Revolt of 1857) ... 93
8.1 परिचय (Introduction) ... 93
8.2 कारण (Causes) ... 93
1. आर्थिक कारण (Economic Causes) ... 93
2. सामाजिक-धार्मिक कारण (Socio-Religious Causes) ... 94
3. राजनीतिक कारण (Political Causes) ... 94
4. प्रशासनिक कारण (Administrative Causes) ... 94
5. सैन्य कारण (Military Causes) ... 95
6. तात्कालिक कारण (Immediate Cause) ... 95
8.3 विद्रोह की शुरुआत एवं प्रसार (Beginning and Spread of the Revolt) ... 95
दिल्ली (Delhi) ... 96
कानपुर (Kanpur) ... 96
लखनऊ (Lucknow) ... 96
जगदीशपुर (Jagdishpur) ... 96
झाँसी (Jhansi) ... 96
अन्य क्षेत्र (Other Areas) ... 97
8.4 विद्रोह की असफलता के कारण (Causes of Failure of the Revolt) ... 97
8.5 विद्रोह का विश्लेषण (Analysis of the Revolt) ... 98
8.6 विद्रोह के बाद बदलाव (Changes After the Revolt) ... 98
प्रशासन में (In Administration) ... 98
सेना में (In Military) ... 98
अर्थव्यवस्था (In Economy) ... 98
समाज में (In Society) ... 99
8.7 विद्रोह का स्वरूप: विश्लेषण (Nature of the Revolt: Analysis) ... 99

इकाई-III: ताज शासन से स्वतंत्रता तक

अध्याय 9

भारतीय राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण (Indian Nationalism and First Phase of National Movement) (1858-1907) ... 103
9.1 परिचय (Introduction) ... 103
राष्ट्र (Nation) ... 103
राष्ट्रवाद (Nationalism) ... 103
भारतीय राष्ट्रवाद (Indian Nationalism) ... 103
भारत: एक राष्ट्र (India: A Nation) ... 103
9.2 भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के कारण (Causes of the Rise of Indian Nationalism) ... 103
भारत का राजनीतिक और प्रशासनिक एकीकरण (Political and Administrative Unification of India) ... 103
भारतीय राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण (Indian Nationalism and First Phase of National Movement) (1858-1907) ... 103
परिवहन और संचार नेटवर्क का विकास (Development of Transportation and Communication Network) ... 104
पश्चिमी शिक्षा (Western Education) ... 104
ब्रिटिश शासन (British Rule) ... 104
आधुनिक प्रेस (Modern Press) ... 104
समकालीन आंदोलन (Contemporary Movements) .. 104
अतीत की पुनर्खोज (Rediscovery of the Past) ... 105
सामाजिक और धार्मिक सुधार (Social and Religious Reform) ... 105
नव-मध्य बुद्धिजीवी वर्ग का उदय (Rise of New Middle Class Intelligentsia) ... 105
ब्रिटिश नीतियाँ (British Policies) ... 105
9.3 राजनीतिक विकास (Political Developments) ... 106
बंगाल प्रेज़िडेंसी में (In Bengal Presidency) ... 106
बॉम्बे प्रेज़िडेंसी में (In Bombay Presidency) ... 106
मद्रास प्रेज़िडेंसी में (In Madras Presidency) ... 107
अन्य क्षेत्रों में (In Other Parts) ... 107
9.4 प्रथम चरण (First Phase, 1885-1905) ... 108
राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयास (Efforts at National Unity) ... 108
प्रमुख कदम (Major Initiatives) ... 108
9.5 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (Foundation of Indian National Congress) ... 109
सुरक्षा कपाट का सिद्धांत (Safety Valve Theory) ... 110
9.6 कांग्रेस के शुरुआती कार्यक्रम और लक्ष्य (Programmes and Objectives of Early

Congress).. 110
9.7 कांग्रेस के आरंभिक नेतृत्व का सामाजिक संघटन (Social Composition of Early Congress Leadership).. 111
9.8 नरमपंथी और गरमपंथी (Moderates and Extremists) 111
नरमपंथी (The Moderates).................................. 111
प्रमुख माँगें (Major Demands)............................. 111
आर्थिक राष्ट्रवाद (Economic Nationalism)............ 112
नरमपंथियों की उपलब्धियाँ (Achievements of Moderates) 113
नरमपंथियों की असफलताएँ (Failures of Moderates) 113
गरमपंथी (The Extremists) 113
9.9 बंगाल विभाजन (Partition of Bengal)ए 1905.............................. 115
9.10 विभाजन विरोधी आंदोलन (Anti-Partition Movement)................................ 116
स्वदेशी आंदोलन (Swadeshi Movement) 116
स्वदेशी समाज (Swadeshi Samaj)........................ 116
नरमपंथी और गरमपंथी नेताओं के बीच फूट (Rift between Moderates & Extremists) 116
गरमपंथियों के अंतर्गत आंदोलन (Movement under Extremists).......................... 117
नए प्रकार का संघर्ष (New Forms of Struggle)....... 117
आंदोलन का कमज़ोर होना और विभाजन का रद्द होना (Weakening of the Movement and Annulment of the Partition).............................. 118
9.11 स्वदेशी आंदोलन का विश्लेषण (Analysis of the Swadeshi Movement)...................................... 119
उपलब्धियाँ (Achievements)................................ 119
असफलताएँ (Failures).. 119
9.12 सूरत विभाजन (Surat Split, 1907).. 119
वैचारिक अंतर (Ideological Differences).............. 119
विभाजन (The Split).. 120

अध्याय 10

राष्ट्रीय आंदोलन का द्वितीय चरण और क्रांतिकारी आंदोलन (Second Phase of National Movement and Revolutionary Movement)....................124
10.1 उग्रवाद का उदय (Rise of Extremism) 124
उग्र राष्ट्रवाद (Militant Nationalism)...................... 124
सिद्धांत (Doctrine).. 124
उदय के कारण (Factors for the Rise).................. 124
राष्ट्रीय आंदोलन का द्वितीय चरण और क्रांतिकारी आंदोलन (Second Phase of National Movement and Revolutionary Movement)................................. 124
10.2 अखिल भारतीय मुस्लिम लीग (All India Muslim League)................................ 125
पृष्ठभूमि (Background) 125
10.3 क्रांतिकारी राष्ट्रवाद (Revolutionary Nationalism) 126
क्रांतिकारी आंदोलनों का उदय (Rise of Revolutionary Movements)................. 126
बंगाल का परिदृश्य (Bengal Scenario).................. 127
विभाजन का विरोध करने वाले बंगाल के प्रमुख नेता (Major Leaders of Anti-Partition Agitations in Bengal)... 127
गदर पार्टी (Ghadar Party)................................... 129
हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (Hindustan Socialist Republican Association).. 129
चटगाँव शस्त्रागार छापा (Chittagong Armoury Raid) 131
10.4 विकेंद्रीकरण से संबंधित शाही आयोग (Royal Commission on Decentralisation).................... 131
10.5 प्रथम विश्व युद्ध और राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया (First World War and Nationalist Responses) 132
प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत (Beginning of first world war) 132
प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत में भारतीय परिदृश्य (Indian scenario at the outbreak of first world war) 132
प्रथम विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रवादी आंदोलन (Nationalist Movement during First World War) 132
10.6 प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारत (India after First World War) 136

अध्याय 11

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनः गांधीवादी युग (Indian National Movement: Gandhian Era) (1917-1947)..138
11.1 परिचय (Introduction)... 138
11.2 गाँधी का उदय (Rise of Gandhi).......................... 138
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनः गाँधीवादी युग (Indian National Movement: Gandhian Era) (1917-1947).. 138
चंपारण सत्याग्रह (Champaran Satyagrah) 139
अहमदाबाद मिल हड़ताल (Ahmedabad Mill Strike) 139
खेड़ा सत्याग्रह (Kheda Satyagrah)....................... 140
विश्लेषण (Analysis) 140
11.3 मॉन्टेग्यू/अगस्त घोषणा-पत्र (Montague/ August Declaration).. 140
पृष्ठभूमि (Background) 140

मुख्य बिंदु (Key Features) 140
अगस्त घोषणा-पत्र के निहितार्थ (Implications of August Declaration) 141
11.4 मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (Montague-Chelmsford Reform) 141
केंद्र सरकार (Centre Government) 141
प्रांतीय सरकारें (Provincial Governments) 141
11.5 रॉलेट सत्याग्रह (Rowlatt Satyagrah) 142
11.6 ख़िलाफ़त और असहयोग आंदोलन (Khilafat and Non-Cooperation Movement) 143
ख़िलाफ़त आंदोलन (Khilafat Movement) 143
असहयोग आंदोलन (Non-Cooperation Movement). 144
11.7 गाँधीवादी राष्ट्रवाद की विशेषताएँ और गाँधी जी का जन-आह्वान (Characteristics of Gandhian Nationalism and Gandhi's Popular Appeal)...... 147
गाँधीवादी राष्ट्रवाद की विशेषताएँ (Characteristics of Gandhian Nationalism)....... 147
गाँधी जी का जन-आह्वान (Gandhi's Popular Appeal) 148
11.8 असहयोग आंदोलन के बाद (Post Non-Cooperation Movement) 148
राष्ट्रीय राजनीति (National Politics)....................... 148
अपरिवर्तनवादी/यथास्थितिवादी (No-Changers) 150
11.9 क्रांतिकारी आंदोलन-II (Revolutionary Movement-II)150
11.10 साइमन आयोग (Simon Commission) 151
11.11 नेहरू रिपोर्ट (Nehru Report)................................ 152
11.12 दिल्ली प्रस्ताव और जिन्ना की 14 सूत्रीय माँगें (Delhi Proposals and Jinnah's Fourteen Points Demands) 152
11.13 दिल्ली घोषणा-पत्र (Delhi Manifesto)..................... 153
11.14 लाहौर अधिवेशन (Lahore Session) 153
11.15 सविनय अवज्ञा आंदोलन (Civil Disobedience Movement) 154
सविनय अवज्ञा आंदोलन के कारण (Reasons Behind Civil Disobedience Movement) 154
तरीका (Course).. 155
11.16 गाँधी-इरविन समझौता (दिल्ली समझौता) [Gandhi-Irwin Pact Delhi Pact, ... 157
सविनय अवज्ञा आंदोलन का मूल्यांकन (Evaluation of Civil Disobedience Movement).. 158
गाँधी जी द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लिए जाने के कारण (Reasons Gandhi Agreed to Call Off CDM)... 158
11.17 कांग्रेस का कराची अधिवेशन (Karachi Congress Session) (1931) 158
11.18 द्वितीय गोलमेज सम्मेलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन का द्वितीय चरण (2nd Round Table Conference and 2nd Phase of Civil Disobedience Movement) 159
सरकारी कार्यवाही (Government Action)................ 159
सांप्रदायिक पंचाट (Communal Award).................. 159
गाँधी जी की प्रतिक्रिया (Gandhi's Response)......... 160
पूना समझौता (Poona Pact) 160
11.19 सविनय अवज्ञा आंदोलन का मूल्यांकन (Evaluation of Civil Disobedience Movement)........................ 160
11.20 भारत सरकार अधिनियम, 1935 (Government of India Act, 1935)... 160
अधिनियम के प्रावधान (Provisions of the Act) 160
भारत सरकार अधिनियम, 1935 का मूल्यांकन (Evaluation of the GoI Act, 1935) 162
11.21 रणनीतिक बहस (Strategic Debate) 162
प्रथम चरण (First Stage).................................... 163
संघर्ष-विराम-संघर्ष और विजय प्राप्त करने तक संघर्ष (Struggle-Truce-Struggle and Standing for Victory).. 163
द्वितीय चरण (Second Stage) 164
11.22 1937 के चुनाव (Elections of 1937) 164
11.23 हरिपुरा अधिवेशन, 1938 और त्रिपुरी अधिवेशन, 1939 (Haripura Session, 1938 and Tripuri Session, 1939)... 165
11.24 कांग्रेस मंत्रिमंडल का इस्तीफ़ा (Resignation of Congress Ministries).. 166
11.25 द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान की गतिविधियाँ (Movement during World War) 166
11.26 अगस्त प्रस्ताव (August Offer) (1940) 166
11.27 व्यक्तिगत सत्याग्रह (Individual Satyagraha) 167
उद्देश्य (Aims).. 167
11.28 क्रिप्स मिशन (Cripps Mission) (1942) 167
मुख्य प्रस्ताव (Main Proposals)............................ 168
क्रिप्स मिशन की असफलता के कारण (Reasons for Failure of Cripps Mission) 168
मूल्यांकन (Evaluation) 168
11.29 भारत छोड़ो आंदोलन (Quit India Movement).......... 168
आंदोलन शुरू किए जाने के कारण (Reasons for Launch of Movement) 169
आंदोलन में भागीदारी (Participation in the Movement)....................... 170
आंदोलन की असफलता के कारण (Reasons for Failure) 171
मूल्यांकन (Evaluation) 171
11.30 भारत छोड़ो आंदोलन के बाद से आज़ादी तक (Post Quit India to Freedom) 171
परिचय (Introduction)... 171
सी. राजगोपालाचारी फॉर्मूला

(C. Rajagopalachari Formula) 172
देसाई-लियाकत समझौता (Desai-Liaquat Pact)........ 172
गाँधी-जिन्ना वार्ता (Gandhi-Jinnah Talks)............... 172
वेवेल योजना (Wavell Plan) 173
महायुद्ध के बाद का राष्ट्रीय पुनरुत्थान
(Post World War National Upsurge)................. 173
आज़ाद हिंद फ़ौज (आईएनए)
(Indian National Army - INA) 174
शाही भारतीय नौसेना विद्रोह
Royal Indian Navy Revolt, 1946........................ 177
कैबिनेट मिशन (Cabinet Mission) (1946) 177
प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस (Direct Action Day, 1946)... 178
माउंटबेटन योजना (Mountbatten Plan) (1947) 179
कांग्रेस द्वारा अधिराज्य का दर्जा स्वीकार किए जाने के कारण (Reasons Congress Accepted Dominion Status)... 180
समय-पूर्व सत्ता हस्तांतरण क्यों?
(Why Early Withdrawal?).................................. 180
कांग्रेस द्वारा विभाजन स्वीकार किए जाने के कारण
(Reasons Congress accepted Partition)........... 181
11.31 भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गाँधी की भूमिका (Role of Mahatma Gandhi in Indian National Movement) 182
11.32 देशी रियासतों का एकीकरण (Integration of Native States).. 183

इकाई-IV: भारत के बिल्डिंग ब्लॉक

अध्याय 12

ब्रिटिश शासन के भारत पर आर्थिक प्रभाव
(Economic Impact of British Rule in India).................... 190
12.1 परिचय (Introduction)... 190
12.2 वाणिज्यिक चरण (Commercial Phase)................. 190
ब्रिटिश शासन का भारत पर आर्थिक प्रभाव
(Economic Impact of British Rule in India) 190
12.3 आर्थिक उपनिवेशवाद के विभिन्न चरण (Different Phases of Economic Colonialism) 191
प्रथम चरण: वाणिज्यिक पूँजीवाद
(First Phase: Mercantile Capitalism) (1757-1813)... 191
द्वितीय चरण: औद्योगिक पूँजीवाद (Second Phase: Industrial Capitalism) (1813-1858)....... 191
तृतीय चरण: वित्तीय पूँजीवाद, 1860 के बाद
(Third Phase: Financial Capitalism, 1860 Onwards)... 192
12.4 भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव
(Effects of British Rule on Indian Economy) 192
भारतीय अर्थव्यवस्था का विऔद्योगीकरण
(De-industrialisation of Indian Economy).......... 192
कृषक वर्ग की निर्धनता
(Impoverishment of the Peasantry) 193
नए ज़मींदार वर्ग का उदय
(Rise of New Landlordism) 193
कृषि की गति हीनता और पतन
(Stagnation and Deterioration of Agriculture)... 193
आधुनिक उद्योगों का विकास
(Development of Modern Industries)................ 193
नए उच्च मध्यवर्ग का उदय
(Rise of New Upper Middle Class).................. 193
अकाल और गरीबी (Famine and Poverty) 193
परिवहन और संचार साधनों का विकास
(Development of Means of Transport and Communication).. 194
राष्ट्रीय आंदोलन पर प्रभाव
(Impact on National Movement) 194

अध्याय 13

भारत में संप्रदायवाद (Communalism in India)................. 197
13.1 सांप्रदायिकता (Communalism) 197
13.2 सांप्रदायिकता के चरण
(Stages of Communalism)................................ 197
प्रथम चरण: सांप्रदायिक राष्ट्रवाद
(Stage 1: Communal Nationalism)................... 197
द्वितीय चरण: उदारवादी सांप्रदायिकता
(Stage 2: Liberal Communalism)..................... 197
भारत में संप्रदायवाद
(Communalism in India) 197
तृतीय चरण: चरम सांप्रदायिकता
(Stage 3: Extreme Communalism)................... 198
13.3 भारत में सांप्रदायिकता का विकास (Development of Communalism in India).................................... 198
1870 के दशक से पहले सांप्रदायिकता की अनुपस्थिति (Absence of Communalism before 1870s)... 198
सांप्रदायिकता एक आधुनिक अवधारणा
(Communalism as a Modern Concept)............. 198
13.4 विश्लेषण: विभाजन में सांप्रदायिकता की भूमिका
(Analysis: Role of Communalism in Partition) ... 200
द्वि-राष्ट्र सिद्धांत और पाकिस्तान आंदोलन
(Two-Nation Theory and Pakistan Movement) .. 200
भारत विभाजन: अपरिहार्य और अनिवार्य
(Partition of India: Inevitable and Unavoidable) 202

अध्याय 14

ब्रिटिश कालीन संवैधानिक विकास
(Constitutional Developments during British Period) 205

14.1 परिचय (Introduction).. 205
14.2 कंपनी का शासन (Company Rule), (1773-1858).. 205
विनियमन अधिनियम (Regulating Act), 1773.......... 205
ब्रिटिश कालीन संवैधानिक विकास (Constitutional Developments during British Period).. 205
पिट्स इंडिया अधिनियम (Pitt's India Act), 1784 206
चार्टर अधिनियम (Charter Act), 1793 207
चार्टर अधिनियम (Charter Act), 1813 208
चार्टर अधिनियम, 1833/संत हेलेना अधिनियम (Charter Act, 1833/Saint Helena Act) 208
चार्टर अधिनियम (Charter Act), 1853 209
कंपनी शासन के अंतर्गत विकास: एक आलोचनात्मक विश्लेषण (Developments under Company Rule: A Critical Analysis) 210
14.3 ताज का शासन (Crown Rule), (1858 -1947) 210
भारत सरकार अधिनियम (Government of India Act), 1858 211
भारतीय परिषद् अधिनियम (Indian Councils Act), 1861 211
भारतीय परिषद् अधिनियम (Indian Councils Act), 1892 212
भारतीय परिषद् अधिनियम (Indian Councils Act), 1909 213
भारत सरकार अधिनियम (Government of India Act), 1919) 214
भारत सरकार अधिनियम (Government of India Act), 1935 216
भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम (Indian Independence Act), 1947..................... 217
14.4 संविधान सभा और संविधान (Constituent Assembly and Constitution)... 218
14.5 भारत में संवैधानिक विकास: एक आलोचनात्मक विश्लेषण (Constitutional Development in India: A Critical Analysis) 218

अध्याय 15

भारतीय प्रेस का विकास और उसका प्रभाव

(Development and Impact of Indian Press) 222
15.1 भारत में प्रेस का विकास (Development of Press in India)... 222
15.2 प्रेस का विनियमन (Regulations on Press) 222
समाचार-पत्रों का पत्रेक्षण अधिनियम, 1799 (Censorship of the Press Act, 1799)................ 222
अनुज्ञप्ति विनियम, 1823 (Licensing Regulations, 1823)......................... 222
भारतीय प्रेस का विकास और उसका प्रभाव (Development and Impact of Indian Press)...... 222
भारतीय प्रेस निवारण, 1835 (Liberation of the Indian Press, 1835) 223
अनुज्ञप्ति अधिनियम, 1857 (Licensing Act, 1857)... 223
पंजीकरण अधिनियम, 1867 (Registration Act, 1867) 223
देशी भाषा समाचार-पत्र अधिनियम, 1878 (Vernacular Press Act, 1878)........................... 223
समाचार-पत्र अधिनियम, 1908 (Newspapers Act, 1908) 223
भारतीय प्रेस अधिनियम, 1910 (Indian Press Act, 1910).................................. 224
भारतीय प्रेस (आपातकालीन शक्तियाँ) अधिनियम, 1931 [Indian Press (Emergency Powers) Act, 1931 224
प्रेस जाँच समिति, 1947 (Press Enquiry Committee, 1947)..................... 224
प्रेस (आपत्तिजनक विषय) अधिनियम, 1951 [Press (Objectionable Matters Act), 1951,....... 224
समाचार-पत्र आयोग, 1952 (Press Commission, 1952) 224
15.3 भारतीय प्रेस का प्रभाव (Impact of Indian Press).................................. 224
सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों में प्रेस की भूमिका (Role of Press in Socio-Religious Reform Movement).. 224
राष्ट्रवादी नेताओं द्वारा प्रेस का उपयोग (Use of Press by Nationalist Leaders)............. 225
गाँवों में प्रेस का प्रभाव (Impact of Press in Villages)............................ 225
राष्ट्रवाद के उत्थान में प्रेस की भूमिका (Role of Press in Elevating Nationalism)........... 225
15.4 भारत में प्रेस की स्वतंत्रता के समर्थक (Advocates of Freedom of Press in India) 225
कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य (Some Important Facts)........ 225

अध्याय 16

शिक्षा नीतियों का विकास और प्रभाव

(Development and Impact of Education Policies)..........228
16.1 परिचय (Introduction)... 228
16.2 स्वदेशी शिक्षा प्रणाली (Indigenous Education System) 228
16.3 ब्रिटिश पहल (British Initiative)............................ 228
शिक्षा नीतियों का विकास और प्रभाव (Development and Impact of Education Policies)... 228
16.4 चार्टर अधिनियम, 1813 (Charter Act, 1813).. 229

कारण (Reasons) 229
विशेषताएँ (Features) 229
अधिनियम का महत्त्व (Importance of the Act)........ 229
विश्लेषण (Analysis) 229
16.5 प्राच्यवादी और आंग्लवादी (Orientalists and Anglicists) 229
16.6 मैकाले का स्मरण-पत्र (Macaulay's Minutes) (1835)............ 230
कारण (Reasons) 230
विशेषताएँ (Features) 230
स्मरण-पत्र का क्रियान्वयन (Implementation of the Minutes)............ 230
प्रभाव (Impact) 230
विश्लेषण (Analysis) 230
16.7 वुड्स डिस्पैच (Wood's Despatch) (1854)............ 230
कारण (Reasons) 230
विशेषताएँ (Features) 231
प्रभाव (Impact) 231
विश्लेषण (Analysis) 232
16.8 हंटर शिक्षा आयोग (Hunter Education Commission, 1882-83) 232
कारण (Reasons) 232
अनुशंसाएँ (Recommendation)............ 232
विश्लेषण (Analysis) 233
16.9 रैले आयोग और भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम (Raleigh Commission and Indian Universities Act, 1904)............ 233
कारण (Causes) 233
विशेषताएँ (Features) 233
विश्लेषण (Analysis) 233
16.10 शिक्षा नीति पर सरकारी प्रस्ताव (Government Resolution on Education Policy) (1913)............ 234
कारण (Reasons) 234
16.11 सैडलर/कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग, रिपोट (Saddler Commission/Calcutta University Commission, 1917-19) 235
कारण (Reasons) 235
पर्यवेक्षण (Observations) 235
अनुशंसाएँ (Recommendations) 235
विश्लेषण (Analysis) 236
16.12 हार्टोग समिति (Hartog Committee, 1929)............ 236
कारण (Reasons) 236
अनुशंसाएँ (Recommendations) 236
16.13 मौलिक शिक्षा की वर्धा योजना (Wardha Scheme of Basic Education) (1937)............ 236
कारण (Reasons) 236
विशेषताएँ (Features) 237
विश्लेषण (Analysis) 237
16.14 सार्जेंट योजना (Sargent Plan) (1944) 237
कारण (Reasons) 237
विशेषताएँ (Features) 237
विश्लेषण (Analysis) 238
16.15 ब्रिटिश काल में शैक्षणिक संस्थाओं का विकास (Development of Educational Institutions during the British Era) 238
विश्वविद्यालय: कुछ तथ्य (Universities: Some Facts)............ 238
अभियांत्रिकी (Engineering) 238
विज्ञान (Science) 238
16.16 ब्रिटिश शिक्षा नीतियों की सीमाएँ (Limitations of British Education Policies)............ 238
16.17 स्वतंत्रता के बाद शिक्षा नीतियाँ/ समितियाँ (Post-Independence Education Policies/Committees)239
राधाकृष्णन समिति (Radhakrishnan Committee), 1949 239
कोठारी शिक्षा आयोग (Kothari Education Commission), 1964............ 240
कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य (Some Important Fact) 242

अध्याय 17

भारत में अकाल नीतियाँ (Famine Policies in India) 245
17.1 प्रस्तावना (Introduction) 245
17.2 प्राचीन भारत में अकाल (Famines in Ancient India)............ 245
प्रमुख अकाल (Major Famines) 245
17.3 मध्यकालीन भारत में अकाल (Famines in Medieval India)............ 245
प्रमुख अकाल (Major Famines) 245
भारत में अकाल नीतियाँ (Famine Policies in India) 245
17.4 आधुनिक भारत में अकाल (Famines in Modern India)............ 246
अकाल की उपनिवेशवादी परिभाषा (Colonial Definition of Famine) 246
अकाल के कारण (Causes of Famines) 246
17.5 ब्रिटिश शासन के दौरान प्रमुख अकाल (Major Famines During British Rule)............ 247
भारतीय अकाल (Indian Famine) (1896-97).......... 248
भारतीय अकाल (Indian Famine) (1899-1900)...... 249
मैकडॉनल आयोग (MacDonnell Commission) 249
बंगाल अकाल (Bengal Famine) (1943)............ 250
17.6 निष्कर्ष (Conclusion)............ 250

अध्याय 18

जनजातीय और कृषक विद्रोह
(Tribal and Peasant Uprisings) 252
18.1 जनजातीय विद्रोह (Tribal Uprising) 252
पूर्वी भारत में विद्रोह (Revolt in Eastern India) 252
जनजातीय और कृषक विद्रोह (Tribal and Peasant Uprisings) 252
पश्चिमी भारत में विद्रोह (Revolts in Western India) 256
दक्षिण भारत में विद्रोह (Revolts in South India) 257
उत्तर भारत में विद्रोह (Other Important Revolts) 257
जनजातीय विद्रोहों की सीमाएँ (Limitations of Tribal Uprisings) 258
18.2 कृषक आंदोलन (Peasant Movements) 258
18.3 गाँधी जी और किसान संघर्ष (Gandhi and Peasant Struggles) 260

अध्याय 19

स्थानीय स्व-शासन का विकास
(Development of Local Self Government) 265
19.1 परिचय (Introduction) 265
19.2 ब्रिटिश काल में स्थानीय सरकारों का विकास (Development of Local Governments under British Period) 265
19.3 महत्त्वपूर्ण विकास (Significant Developments) 265
लॉर्ड मेयो का प्रस्ताव (Lord Mayo's Resolution), 1870 265
लॉर्ड रिपन का प्रस्ताव (Lord Ripon's Resolution), (1882) 265
स्थानीय स्व-शासन का विकास (Development of Local Self Government) 265
विकेंद्रीकरण पर राजकीय आयोग (Royal Commission on Decentralization), 1907 266
लाहौर प्रस्ताव (Lahore Resolution), 1909 266
मॉण्टेग्यू-चेम्सफॉर्ड सुधार (Montague-Chelmsford Reforms), 1919 266
भारत सरकार अधिनियम (Government of India Act), 1935 266

अध्याय 20

आधुनिक देशी भाषा साहित्य, चित्रकला और संगीत
(Modern Vernacular Literature, Paintings & Music) 268
20.1 परिचय (Introduction) 268
20.2 साहित्य और काव्य (Literature and Poetry) 268
19वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध (First Half of 19th Century) 268
19वीं शताब्दी का उत्तरार्ध (Second Half of 19th Century) 268
आधुनिक देशी भाषा साहित्य, चित्रकला और संगीत (Modern Vernacular Literature, Paintings & Music) 268
प्रभाव (Impact) 269
20.3 चित्रकला (Paintings) 270
कालीघाट पेंटिंग (कालीघाट पट्ट) (Kalighat Painting (Kalighat Pat) 270
राष्ट्रीय कला (National Art) 270
प्रभाव (Impact) 270
20.4 संगीत (Music) 271
प्रभाव (Impact) 271

अध्याय 21

वामपंथ आंदोलन का उदय और राष्ट्रीय आंदोलन में उसका महत्त्व
(Rise of Leftist Movement and it's Significance in National Movement) 273
21.1 परिचय (Introduction) 273
21.2 वामपंथ के विकास के कारण (Causes of Growth) 273
21.3 आंदोलन के चरण (Phases of the Movement) 273
वामपंथ आंदोलन का उदय और राष्ट्रीय आंदोलन में उसका महत्त्व (Rise of Leftist Movement and it's Significance in National Movement) 273
21.4 राष्ट्रीय आंदोलन में वामपंथ की भूमिका का आलोचनात्मक विश्लेषण (Critical Analysis of Leftist's Role in the National Movement) 276

अध्याय 22

श्रम कल्याण कानून (Labour Welfare Laws) 280
22.1 आधुनिक उद्योगों की शुरुआत (Advent of Modern Industries) 280
श्रमिकों की दुर्दशा (Plight of Workers) 280
सुधारों की शुरुआत (Beginning of Reforms) 280
असम में बागानी (Plantation in Assam) 280
श्रमिक कानूनों का क्रमिक विकास (Evolution of Labour Laws) 280
श्रम कल्याण कानून (Labour Welfare Laws) 280
कारखाना अधिनियम, 1934 (Factories Act, 1934) 281
22.2 कारखाना अधिनियमों की समीक्षा (Overview of the Factories Act) 282
22.3 व्यापारिक संघ आंदोलन (Trade Union Movement) 282
वैयक्तिक प्रयास (Individual Efforts) 282
प्रमुख श्रमिक हड़तालें (Major Workers' Strikes) 282
अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) 283

22.4 अन्य श्रम अधिनियम (Other Labour Acts).............. 284
व्यावसायिक संघ अधिनियम (Trade Union Act), 1926284
व्यापार विवाद अधिनियम (Trade Disputes Acts & TDA), 1929.. 284

इकाई–V: आधुनिक भारत के निर्माता

अध्याय 23

स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान (Important Contributions to Freedom Struggle) 288
23.1 परिचय (Introduction).. 288
23.2 विदेशियों का योगदान (Contribution of Foreigners) 288
एनी बेसेंट (Annie Besant) 288
चार्ल्स फ्रीअर दीनबंधु एंड्रूज (Charles Freer 'Dinabandhu' Andrews)................................... 288
सत्यानंद स्टोक्स (Satyanand Stokes)..................... 288
मेडिलीन स्लेड (Madeleine Slade)........................ 288
स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान (Important Contributions to Freedom Struggle) 288
नेली सेनगुप्ता (Nellie Sengupta)........................... 289
मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल (सिस्टर निवेदिता) (Margaret Elizabeth Noble (Sister Nivedita) 289
23.3 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासियों का योगदान (Tribals Contributions in Indian Freedom Struggle) 289
चुआर (Chuars) 289
भील (Bhils) 289
संथाल (Santhals) 289
मुंडा विद्रोह (Munda Uprising)............................. 290
रंपा विद्रोह (Rampa Rebellion) 290
रानी गाइडिन्ल्यू का विद्रोह (Rani Gaidinliu's Rebellion).. 290
सिंगफो विद्रोह (Singpho Rebellion)...................... 290
तिलक मांझी विद्रोह (Tilka Manjhi Revolt) 290
23.4 पूर्वोत्तर का योगदान (North-Eastern Contribution).. 290
23.5 महिलाओं का योगदान (Women Contribution)......... 291
सरोजिनी नायडू (Sarojini Naidu)........................... 291
मैडम कामा (Madam Cama) 291
अरुणा आसफ़ अली (Aruna Asaf Ali) 291
ऊषा मेहता (Usha Mehta) 291
विजय लक्ष्मी पंडित (Vijaya Lakshmi Pundit).......... 291
23.6 दलितों का योगदान (Dalit Contribution) 292
डॉ. बी.आर. अंबेडकर (B.R. Ambedkar)................. 292
राजकुमारी गुप्ता (Raj Kumari Gupta)..................... 292
तारा रानी श्रीवास्तव (Tara Rani Srivastava)............ 292
इमैनुअल सैकरनार (Immanuel Sekaranar).............. 292
23.7 मुसलमानों का योगदान (Role of Muslims) 292
23.8 सिक्खों का योगदान (Contribution of Sikhs)........... 293
23.9 साम्यवादियों का योगदान (Communists Contributions)... 294
23.10 पूँजीपतियों का योगदान (Capitalist's Contribution) .. 294
23.11 किसानों का योगदान (Peasant Contribution) 295
किसान सभा आंदोलन (The Kisan Sabha Movement) 296
मोपला विद्रोह (Mappila Revolt)............................ 296
बारदोली सत्याग्रह (Bardoli Satyagraha)................. 296
23.12 श्रमजीवी वर्ग का योगदान (Working Class Contribution) 296
आरंभिक चरण (Early Phase)............................... 296
स्वदेशी के दौरान (During Swadeshi) 297
एक राष्ट्रीय इकाई के रूप में (As a National Entity). 297
प्रमुख राष्ट्रीय आंदोलनों में भागीदारी (Participation in Major National Movements).... 297
23.13 सारांश (Conclusion) 297

अध्याय 24

गवर्नरों का योगदान (Contribution of Governors) 300
24.1 बंगाल के गवर्नर जनरल (Governor Generals of Bengal) 300
वारेन हेस्टिंग्स (Warren Hastings) (1772-85) 300
गवर्नरों का योगदान (Contribution of Governors)............................. 300
कार्नवालिस (Cornwallis) (1786-93) 301
सर जॉन शोर (Sir John Shore) (1793-98)............ 303
लॉर्ड वेलेजली (Lord Wellesley) (1798-1805)....... 303
सर जॉर्ज बार्लो (Sir George Barlow) (1805-07).... 303
लॉर्ड मिंटो-प्रथम (Lord Minto-I) (1807-13)............ 303
लॉर्ड हेस्टिंग्स (Lord Hastings) (1813-23)............. 303
लॉर्ड एमहर्स्ट (Lord Amherst) (1823-28).............. 304
24.2 भारत के गवर्नर जनरल (Governor Generals of India).. 304
लॉर्ड विलियम बेंटिंक (Lord William Bentinck) (1828-35)... 304
लॉर्ड मेटकॉफ (Lord Metcalfe) (1835-1836)......... 304
लॉर्ड ऑकलैंड (Lord Auckland) (1836-42) 304
लॉर्ड एलेनबरो (Lord Ellenborough) (1842-44)..... 304
लॉर्ड हॉर्डिंग-प्रथम (Lord Hardinge-I) (1844-48) ... 304
लॉर्ड डलहौजी (Lord Dalhousie) (1848-56).......... 304
24.3 भारत के वायसराय (Viceroys of India)................... 305
लॉर्ड कैनिंग (Lord Canning) (1856-62) 305
लॉर्ड एल्गिन-प्रथम (Lord Elgin I) (1862-63).......... 305
लॉर्ड जॉन लॉरेंस (Lord John Lawrence) (1863-68)305
लॉर्ड मेयो (Lord Mayo) (1869-72)...................... 305
लॉर्ड नॉर्थब्रूक (Lord Northbrook) (1872-76)......... 306
लॉर्ड लिटन (Lord Lytton) (1876-80).................... 306

लॉर्ड रिपन (Lord Ripon) (1880-84) 306
लॉर्ड डफरिन (Lord Dufferin) (1884-88) 307
लॉर्ड लैंसडाउन (Lord Lansdowne) (1888-94) 307
लॉर्ड एल्गिन-द्वितीय (Lord Elgin-II) (1894-99) 307
लॉर्ड कर्ज़न (Lord Curzon) (1899-05) 307
लॉर्ड मिंटो-द्वितीय (Lord Minto-II) (1905-10) 307
लॉर्ड हॉर्डिंग-द्वितीय (Lord Hardinge-II) (1910-16) . 308
लॉर्ड चेम्सफोर्ड (Lord Chelmsford) (1916-21) 308
लॉर्ड रीडिंग (Lord Reading) (1921-26) 308
लॉर्ड इरविन (Lord Irwin) (1926-31) 308
लॉर्ड वेलिंग्डन (Lord Wellingdon) (1931-36) 309
लॉर्ड लिनलिथगो (Lord Linlithgow) (1936-44) 309
लॉर्ड वेवेल (Lord Wavell) (1943-47) 309
लॉर्ड माउंटबेटन (Lord Mountbatten) (1947-48) 309

अध्याय 25

भारत के महान व्यक्तित्व
(Great Personalities of India) 313
25.1 परिचय (Introduction) 313
25.2 महात्मा गांधी (Mahatma Gandhi) 313
विचारधारा (Ideology) 313
25.3 जवाहर लाल नेहरू (Jawaharlal Nehru) 314
विचारधारा (Ideology) 315
योगदान (Contribution) 315
25.4 सुभाष चंद्र बोस (Subhash Chandra Bose) 318
विचारधारा (Ideology) 319
योगदान (Contribution) 319
25.5 बी.आर. अंबेडकर (B.R. Ambedkar) 323
विचारधारा (Ideology) 324
योगदान (Contribution) 324
25.6 भगत सिंह (Bhagat Singh) 326
विचारधारा (Ideology) 326
योगदान (Contribution) 326
25.7 दीनदयाल उपाध्याय (Deendayal Upadhyay) 329
विचारधारा (Ideology) 329
योगदान (Contribution) 329
25.8 स्वामी विवेकानंद (Vivekanand) 330
विचारधारा (Ideology) 330
योगदान (Contribution) 330
25.9 सरदार वल्लभभाई पटेल (Sardar Vallabhbhai Patel) 331
विचारधारा (Ideology) 331
योगदान (Contribution) 331
25.10 राजा राममोहन राय (Raja Ram Mohan Roy) 332
विचारधारा (Ideology) 332
योगदान (Contribution) 332
25.11 ईश्वरचंद्र विद्यासागर (Ishwar Chandra Vidyasagar) 333
विचारधारा (Ideology) 333
योगदान (Contribution) 333
25.12 ज्योतिबा फुले (Jyotiba Phule) 333
विचारधारा (Ideology) 334
योगदान (Contribution) 334
25.13 बाल गंगाधर तिलक (Bal Gangadhar Tilak) 334
विचारधारा (Ideology) 335
योगदान (Contributions) 335
25.14 पंडित मदनमोहन मालवीय
(Pt. Madan Mohan Malaviya) 335
विचारधारा (Ideology) 336
योगदान (Contributions) 336
25.15 स्वामी दयानंद सरस्वती (Dayanand Saraswati) 336
विचारधारा (Ideology) 336
योगदान (Contribution) 336
25.16 रबींद्रनाथ टैगोर (Rabindranath Tagore) 337
विचारधारा (Ideology) 337
योगदान (Contributions) 337
25.17 अन्य प्रभावशाली व्यक्तित्व (Other Important
Personalities) 340
परिशिष्ट-I: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन (Indian National Congress Conferences) 377
परिशिष्ट-II: स्वतंत्रता से पूर्व भारत में समितियाँ और आयोग (Committees and Commissions in India before Independence 380
परिशिष्ट-III: पत्रिकाएं/पुस्तकें/स माचार-पत्र (Magazines/Books/News Paper) 382

इकाई I

सत्ता संघर्ष का एक युग

1. **मुग़ल** (Mughals) 2
2. **क्षेत्रीय सत्ताओं का उदय** (Rise of Regional Powers) 14
3. **यूरोपियों का आगमन** (Advent of Europeans) 35
4. **ब्रिटिश राज्य के उदय में बाधाएँ** (Obstacles to British Rise) 44
5. **बंगाल में अंग्रेज़ी सत्ता का उदय** (Rise of British Power in Bengal) 58
6. **ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन काल में प्रशासन** (Administration during East India Company), 1757–1856 65

अध्याय

1

मुग़ल

(Mughals)

1.1 मुग़ल साम्राज्य का उद्भव (Development of the Mughal Empire)

मुग़ल शब्द मंगोलिया की 'मंगोल' नामक खानाबदोश जनजाति से उद्धृत हुआ है। 13वीं शताब्दी में चंगेज़ (Genghis) खान ने एशिया एवं यूरोप के मध्य भू-भाग में फैले मंगोलों के विभाजित समूहों को संगठित करके मंगोल साम्राज्य की नींव रखी। तत्पश्चात् चौदहवीं शताब्दी में एक बारलस (Barlas) तुर्क, तैमूर ने स्वयं को चंगेज़ खान के वंश का उत्तराधिकारी एवं स्वतंत्र संप्रभु शासक घोषित किया। चंगेज़ खान के वंशज बाबर ने 1526 ईसवी में पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी को पराजित कर भारत में मुग़ल साम्राज्य की नींव रखी।

बाबर (Babur)

बाबर

बाबर के पूर्वज तैमूर को अपने भारतीय अभियानों से अत्यधिक लाभ प्राप्त हुआ था। तैमूर ने पंजाब का कुछ क्षेत्र हड़प लिया था, जो कई पीढ़ियों तक उसके उत्तराधिकारियों के अधिकार बना रहा। जब बाबर ने अफ़ग़ानिस्तान पर विजय प्राप्त की, तो उसने इन क्षेत्रों पर भी अपना अधिकार समझा। इस विजय ने उसे भारत विजय के लिए प्रेरित किया।

भारत-विजय के कारण (Reasons for Conquest of India)

मध्य एशिया के सैकड़ों आक्रमणकारियों की तरह बाबर भी हिंदुस्तान की अपार धन-संपदा की ओर आकर्षित हुआ। बाबर की दृष्टि में भारत, काबुल के अल्प राजस्व की क्षतिपूर्ति कर सकता था। साथ ही, वह उज़्बेकों के काबुल पर आक्रमण को लेकर भी सशंकित था, इसलिए वह भारत में अपनी सत्ता स्थापित कर उज़्बेकों के ख़िलाफ़ अपने अभियान को जारी रख सकता था। भारत की विभाजित राजनीतिक परिस्थितियाँ भी बाबर के अनुकूल थीं। पंजाब के तत्कालीन प्रमुख दौलत खाँ लोदी ने भी उससे भारत में आक्रमण करने का आग्रह किया था। था। कुछ इतिहासकारों का मत है कि मेवाड़ के शासक राणा सांगा ने भी बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया था, मगर यह मत अत्यंत भ्रामक है।

पानीपत के प्रथम युद्ध (20 अप्रैल, 1526) में इब्राहिम लोदी को पराजित करके बाबर ने दिल्ली एवं आगरा पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था। चूँकि सिंधु-गंगा घाटी क्षेत्र में बाबर की उपस्थिति राणा सांगा के लिए एक ख़तरा थी, अत: राणा सांगा बाबर को पंजाब तक सीमित रखना चाहता था। बाबर ने राणा सांगा पर आरोप लगाया कि उसने पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी के विरुद्ध उसका साथ नहीं देकर समझौते का उल्लंघन किया है। अत: बाबर एवं सांगा की सेनाओं में 1527 ईसवी में 'खानवा में युद्ध' हुआ, जिसमें राणा सांगा पराजित हुआ।

चित्र: पानीपत के प्रथम युद्ध का दृश्य

खानवा के युद्ध में मिली विजय से दिल्ली-आगरा क्षेत्र में बाबर की स्थिति मज़बूत हो गई। तत्पश्चात् उसने चंदेरी के शासक मेदनीराय के ख़िलाफ़ 1528 ईसवी में 'चंदेरी का युद्ध' लड़ा तथा चंदेरी पर अधिकार कर लिया।

चित्र: खानवा युद्ध का दृश्य

लेकिन, पूर्वी उत्तर प्रदेश में अफ़ग़ानों का दबदबा था तथा उनके साथ बाबर का मेल-मिलाप नहीं हो सका। अत: बाबर ने 1529 ईसवी में अफ़ग़ानों के ख़िलाफ़ घाघरा का युद्ध लड़ा, किंतु वह निर्णायक विजय प्राप्त नहीं कर सका। बाबर ने अफ़ग़ानों के साथ

समझौता किया और बिहार पर अफ़ग़ानों का अधिकार स्वीकार किया। इसके कुछ समय बाद ही 26 दिसंबर, 1530 को बाबर की मृत्यु हो गई।

यद्यपि बाबर एक रूढ़िवादी सुन्नी था, लेकिन वह कट्टर नहीं था। वह तुर्की भाषा के दो प्रमुख लेखकों में से एक था। उसने 'तुज़ुक -ए-बाबरी' नामक संस्मरण की रचना भी की।

बाबर की भारत-विजय का महत्त्व (Significance of Babur's Conquest of India)

1. उसने काबुल एवं कंधार को उत्तर भारतीय साम्राज्य में शामिल किया, जिससे-
   - लगभग 200 वर्षों तक उत्तरी-पश्चिमी सीमा सुरक्षित रही।
   - भारत का व्यापार चीन एवं भूमध्यसागरीय (Mediterranean) बंदरगाहों तक बढ़ गया।
2. लोदी एवं राजपूत राज्यों की पराजय से अंततः संपूर्ण भारत में मुग़ल साम्राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ।
3. भारत में युद्ध के नए तौर-तरीके में आरंभ हुए। बाबर ने भारत में बारूद एवं तोपों का प्रचलन शुरू किया।
4. उसने ताज की प्रतिष्ठा एवं शक्ति के बल पर राज्य की स्थापना की।

हुमायूँ (Humayun)

हुमायूँ

हुमायूँ ने बाबर के बाद 1530 ईसवी में मुग़ल साम्राज्य की कमान संभाली। उसके सामने कई कठिनाइयाँ थीं, जैसे- नवीन मुग़ल साम्राज्य का एकीकरण, मुग़ल साम्राज्य को भाइयों में विभाजित करने की तैमूरी प्रथा तथा अफ़ग़ान एवं गुजरात के बहादुर शाह की बढ़ती शक्ति आदि। जल्दी ही, हुमायूँ ने गुजरात अभियान कर बहादुर शाह से गुजरात एवं मालवा, दोनों जीत लिए, परंतु कुछ ही समय बाद वह ये दोनों क्षेत्र पुनः हार गया। फिर भी वह बहादुर शाह द्वारा उत्पन्न कठिनाइयों का सामना करने में कामयाब रहा।

इसी बीच, जब हुमायूँ गुजरात अभियान में व्यस्त था, एक शक्तिशाली अफ़ग़ान सरदार, शेरशाह ने अपनी शक्ति बढ़ाई। यद्यपि शेरशाह, मुग़लों के प्रति निष्ठा का दिखावा करता था, किंतु वह वास्तव में मुग़लों को भारत से निष्कासित करने की योजना बना रहा था। शेरशाह ने 'कन्नौज के युद्ध' में 1540 में हुमायूँ को परास्त किया। इस युद्ध ने हुमायूँ को 'बिना राज्य का राजकुमार' (Prince without Kingdom) बना दिया एवं उसे ईरानी शासक के दरबार में शरण लेनी पड़ी।

हुमायूँ की पराजय का प्रमुख कारण था कि उसने अफ़ग़ान शक्ति को समझने में भारी भूल की थी। अफ़ग़ान जनजाति उत्तर में यत्र-तत्र फैली हुई थी, जो शेरशाह के कुशल नेतृत्त्व में संगठित हो सकती थी और उसने उन्हें संगठित भी कर लिया। हुमायूँ के द्वारा बंगाल अभियान के रूप में अपनाई गई अपरिपक्व कूटनीतिक रणनीति भी गलत साबित हुई तथा शेरशाह की विजय के पश्चात् हुमायूँ को अपने भाइयों से भी सहायता प्राप्त नहीं हुई।

परंतु 1555 में, सूर साम्राज्य के विघटन के बाद हुमायूँ पुनः दिल्ली प्राप्त करने में सफल रहा। लेकिन इसके कुछ ही समय बाद, दिल्ली किले में स्थित पुस्तकालय की प्रथम मंज़िल से गिरने के कारण उसकी मृत्यु हो गई। उसकी प्रिय पत्नी बेगा बेग़म के द्वारा उसका मक़बरा बनवाया गया।

सूर साम्राज्य (Sur Empire) (1540-55)

शेरशाह सूरी

शेरशाह 1540 ईसवी में दिल्ली की गद्दी पर आसीन हुआ। मोहम्मद बिन तुगलक के बाद शेरशाह सूरी ने अब तक का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित किया। उसने मालवा एवं राजस्थान को अपने साम्राज्य में शामिल किया। 1545 में शेरशाह की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र इस्लाम शाह शासक बना, जिसने 1553 तक शासन किया। इस्लाम शाह की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारियों के बीच गृहयुद्ध शुरू हो गया। इस अवसर का लाभ उठाकर हुमायूँ ने 1555 में अफ़ग़ानों को परास्त किया एवं दिल्ली तथा आगरा पर पुनः अधिकार कर लिया।

शेरशाह का योगदान (Contribution of Sher Shah)

1. उसने अपने संपूर्ण साम्राज्य में कानून और व्यवस्था की पुनर्स्थापना की।
2. उसने सड़कों का निर्माण करके साम्राज्य के विभिन्न भागों को आपस में जोड़ा, इससे व्यापार-वाणिज्य को तीव्र करने में सहायता मिली। उसने उत्तर-पश्चिम से बंगाल को जोड़ने वाले जी.टी. रोड (Grand Trunk Road – GT Road) का पुनर्निर्माण करवाया। उसने सड़कों के किनारे सरायों एवं धर्मशालाओं का निर्माण कराया। इनमें से बहुत-सी सराएँ, बाज़ार-नगरों (कस्बा) के रूप में विकसित हुई और समाचार सेवा या डाक चौकी के रूप में इस्तेमाल की जाने लगीं।
3. उसके द्वारा संपूर्ण साम्राज्य में किए गए मुद्रा सुधार तथा भार एवं माप के मानकीकरण ने व्यापार एवं वाणिज्य के संवर्द्धन में सहायता की।
4. सासाराम (बिहार) में शेरशाह सूरी ने स्वयं का मकबरा निर्मित कराया, जो सल्तनत-कालीन स्थापत्य कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यही काल मुग़ल स्थापत्य कला का आरंभिक काल था।

अकबर (Akbar)

अकबर

अकबर, मुग़ल शासकों में सबसे महान शासक था। अकबर का राज्याभिषेक 1556 ईसवी में हुआ। 'पानीपत का द्वितीय युद्ध' अकबर के वकील बैरम खाँ और हिंदू शासक हेमू के मध्य 5 नवंबर, 1556 को हुआ, जिसमें हेमू पराजित हुआ। इस युद्ध के बाद अकबर ने साम्राज्य पर

अपना नियंत्रण स्थापित किया। साम्राज्य विस्तार के प्रथम चरण में अकबर ने अजमेर, मालवा, गढ़-कटंगा, राजस्थान, गुजरात एवं बंगाल को अपने नियंत्रण में कर लिया।

अकबर द्वारा किए गए प्रशासनिक सुधारों एवं उदारवादी धार्मिक नीतियों के परिणामस्वरूप गुजरात, बंगाल एवं बिहार में विद्रोह हुए। इन विद्रोहों ने संपूर्ण मुग़ल साम्राज्य को दो वर्षों (1580-81) तक विचलित रखा। अकबर ने अपने प्रबुद्ध अधिकारियों, जैसे- टोडरमल, राजा मान सिंह आदि की मदद से इन विद्रोहों को सफलतापूर्वक दबा दिया।

जल्द ही, उज़्बेकों के बढ़ते ख़तरे के कारण अकबर ने उत्तरी-पश्चिमी सीमा की ओर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया। उसने उत्तर-पश्चिम में अपनी शक्ति संगठित की एवं साम्राज्य की वास्तविक सीमा का आकलन किया। उसने ओडिशा (पूर्व नाम उड़ीसा) एवं ढाका को भी अधिकृत कर लिया। इसके साथ ही, शताब्दी के अंत तक संपूर्ण उत्तर भारत का राजनीतिक एकीकरण कर लिया गया।

तत्पश्चात् उसने दक्षिण (दक्कन) की तरफ ध्यान केंद्रित किया। उसे दक्षिण की कट्टरपंथी प्रतिद्वंद्विता का डर था, जो उत्तर मुग़ल साम्राज्य में फैल सकती थी। इसी दौरान पुर्तगाली भी भारत में अपनी स्थिति मज़बूत कर रहे थे। पुर्तगालियों तेज़ी से संचालित की जा रही धर्मांतरण गतिविधियों ने भी अकबर को दक्षिण में हस्तक्षेप करने हेतु विवश कर दिया।

स्वयं अकबर ने आक्रमण करके 1601 ईसवी में खानदेश पर अधिकार किया। उसी वर्ष उसने बरार, अहमदनगर एवं तेलंगाना के कुछ भागों पर आक्रमण करके उन्हें भी नियंत्रण में कर लिया। हालाँकि दक्षिण की समस्याओं पर कोई अंतिम समाधान नहीं निकला, क्योंकि बीजापुर ने अब तक मुग़लों की अधीनता स्वीकार नहीं की थी। यहाँ की शेष चुनौतियों का सामना आगे जहाँगीर को करना पड़ा।

अकबर के शासनकाल में भू-राजस्व प्रशासन (Land Revenue Administration under Akbar)

भू-राजस्व प्रशासन के क्षेत्र में अकबर ने एक नई पद्धति 'दहसाला' (आइन-ए-दहसाला) अपनाई। इसके अंतर्गत पिछले 10 वर्षों की विभिन्न फ़सलों के औसत उत्पादन एवं औसत मूल्य की गणना की जाती थी। इसमें से एक-तिहाई भाग राज्य का होता था। नकद में राजस्व भुगतान की माँग की जाती थी। इस प्रणाली को 'ज़ब्ती प्रणाली' कहा जाता था, जो राजा टोडरमल से संबंधित थी।

अकबर के शासनकाल में मूल्यांकन की अन्य प्रणालियाँ भी प्रचलित थीं। इनमें से 'बँटाई' एवं 'गल्ला बख्शी' नामक प्रणालियाँ अति सामान्य एवं सबसे पुरानी थीं। इसके अंतर्गत उत्पादन को किसानों एवं राज्य के बीच स्थायी अनुपात में बाँटा जाता था। बँटाई व्यवस्था में किसान के पास नकद में या अन्य रूप में राजस्व चुकाने का विकल्प था, परंतु राज्य, नकद राजस्व भुगतान को प्राथमिकता देता था। इस दौरान प्रयुक्त एक अन्य पद्धति नसक़ (Nasaq) भी थी।

अकबर को कृषि सुधार में अत्यधिक रुचि थी। किसानों को बीज एवं अन्य कृषि आगतों (Agriculture Inputs) के लिए तक़ावी ऋण दिया जाता था। भू-राजस्व के निर्धारण में कृषि की निरंतरता को ध्यान में रखा जाता था। भूमि को गुणवत्ता के आधार पर वर्गीकृत भी किया गया था।

चित्र: टोडरमल तथा अकबर

मनसबदारी व्यवस्था (Mansabdari System)

इस व्यवस्था के अंतर्गत प्रत्येक अधिकारी को एक मनसब रैंक या पद या ओहदा दिया जाता था। कुलीन (अभिजात) वर्ग के लिए निम्नतम पद (मनसब) 10 तथा अधिकतम 5000 था, जिसे बाद में 7000 तक बढ़ाया जा सकता था। जात का अर्थ है- व्यक्तिगत स्थान। जात से मनसबदार का पद-स्थान (ओहदा) और वेतन निर्धारित होता था। अतः 'सवार' का अर्थ है घुड़सवार। सवार से मनसबदार द्वारा रखे जाने वाले घुड़सवारों की संख्या तय होती थी। इस संबंध में, मनसबदारों को अपने सवारों को बनाए रखना पड़ता था। आदर्श रूप में, प्रत्येक घुड़सवार (एक सवार) हेतु दो घोड़ों का रख-रखाव करना होता था।

मनसबदारों को वेतन का भुगतान जागीर के रूप में किया जाता था। कभी-कभी नकद में भी दिया जाता था। इस साम्राज्य का विस्तार तथा संचालन एक शक्तिशाली सेना के बिना असंभव था। इसके लिए सेना के साथ-साथ कुलीन वर्ग को भी सुगठित करना आवश्यक था। अकबर ने ये दोनों उद्देश्य मनसबदारी व्यवस्था के माध्यम से पूर्ण किए।

राजपूतों के साथ संबंध (Relations with the Rajputs)

अकबर ने हुमायूँ की राजपूतों को जीतने की नीति को जारी रखा। अकबर ने इस नीति का विस्तार करते हुए राजपूतों के साथ वैवाहिक संबंधों की नीति का अनुसरण किया। परंतु उसने वैवाहिक संबंध स्थापित करने के लिए कोई पूर्वशर्त नहीं रखी। कई राजपूत राज्यों, जैसे- रणथंभौर, बाँसवाड़ा आदि ने बिना वैवाहिक संबंध स्थापित किए मुग़लों के समक्ष आत्म-समर्पण कर दिया। अकबर की राजपूत नीति धार्मिक सहिष्णुता का भी दृष्टिकोण से युक्त थी। महाराणा प्रताप के नेतृत्व में मेवाड़ ही एकमात्र राजपूत राज्य था, जिसने मुग़ल साम्राज्य की अधीनता स्वीकार नहीं की थी।

चित्रः राजपूत शासकों का अभिवादन स्वीकार करते हुए अकबर

राजपूत राजाओं को मुग़ल प्रशासन में शामिल करने तथा उन्हें मुग़ल कुलीनों के बराबर सम्मान देने की अकबर की नीति अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुई। साथ ही, धार्मिक सहिष्णुता की नीति ने अकबर का राजपूतों से गहरा गठजोड़ स्थापित किया। आगे, अकबर की राजपूत नीति जहाँगीर एवं शाहजहाँ के द्वारा भी अपनाई गई।

अकबर की धार्मिक नीति (Akbar's Religious Policy)

उदारवादी धार्मिक नीति अपनाते हुए अकबर ने 'सुलह-ए-कुल' की नीति को बढ़ावा दिया, जिसके अंतर्गत प्रत्येक धर्म एवं संप्रदाय को समान सम्मान एवं महत्त्व मिलता था। 1557 ईसवी में अकबर ने फ़तेहपुर सीकरी में 'इबादतखाना' नामक प्रार्थना भवन बनवाया, जहाँ वह धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषयों पर धर्मशास्त्रियों, रहस्यवादियों, विद्वान दरबारियों एवं कुलीन वर्ग के साथ चर्चा करता था। अकबर ने एक नए संप्रदाय 'तौहिद-ए-इलाही' को आरंभ करने का प्रयास किया, जिसका अर्थ 'दिव्य एकेश्वरवाद' था।

अकबर ने सामाजिक एवं शैक्षिक सुधार भी शुरू किए। उसने सती प्रथा पर रोक लगाई और इसे केवल विधवा की स्वेच्छा से ही अनुप्रयोग में लाने की अनुमति दी। विधवा पुनर्विवाह वैधानिक कर दिया गया था। विवाह की आयु लड़कियों के लिए 14 वर्ष तथा लड़कों के लिए 16 वर्ष निर्धारित कर दी गई। शराब (Wines) तथा मद्यसार (Spirits) के क्रय-विक्रय पर प्रतिबंध लगाया गया। चूँकि अकबर के काल अंधविश्वास अत्यधिक था, अतः उसके इन प्रयासों को सीमित सफलता ही मिली। अकबर ने शैक्षिक पाठ्यक्रम भी परिवर्तित किया, गया जिसमें नैतिक तथा धर्मनिरपेक्ष विषयों, जैसे- गणित, कृषि, इतिहास, तर्कशास्त्र आदि पर बल दिया गया।

जहाँगीर (Jahangir)

जहाँगीर

जहाँगीर ने 1605 ईसवी में दिल्ली की गद्दी संभाली एवं 1627 ईसवी तक शासन किया। जहाँगीर के शासनकाल की प्रमुख उपलब्धियाँ राजपूतों के साथ प्रगाढ़ संबंध स्थापित करना एवं मेवाड़ के साथ विवाद समाप्त करना थीं। उसने दक्षिण (दक्कन) के राज्य भी अपने अधीन कर लिए, परंतु उसने दक्षिण (दक्कन) के मामलों में गहराई से उलझना उचित नहीं समझा। उसने बंगाल क्षेत्र में अफ़ग़ान विद्रोहों का भी समाधान किया। इसी बीच, ईरान ने कंधार पर आक्रमण करके उसे जीत लिया और शाहजहाँ ने दरबारियों की साज़िश में फँसकर कंधार की रक्षा हेतु जाने से मना कर दिया। अर्थात् शाहजहाँ ने विद्रोह कर दिया। इसी के साथ जहाँगीर के बिगड़ते स्वास्थ्य ने भी शाहजहाँ को सत्ता संभालने का अवसर प्रदान किया।

शाहजहाँ (Shah Jahan)

शाहजहाँ ने 1628 में सत्ता संभाली। आगरा में जहाँगीर के ख़राब स्वास्थ्य के कारण फैली अव्यवस्था, शाहजहाँ के विद्रोह और महावत खाँ की महत्वाकांक्षा के कारण दक्षिणी राज्यों का नियंत्रण हाथ से चला गया। दक्षिण में शांति स्थापना के लिए शाहजहाँ ने महसूस किया कि अहमदनगर को अधीन करना अत्यावश्यक है।

शाहजहाँ

शाहजहाँ ने बीजापुर के आदिलशाह के साथ अहमदनगर के ख़िलाफ़ संधि करने का प्रयास किया। परंतु आदिलशाह ने मुग़लों के ख़तरे को पहचान लिया तथा अहमदनगर के ख़िलाफ़ मुग़लों का साथ नहीं दिया। अतः मुग़ल दक्षिणी क्षेत्र को नियंत्रित करने में असफल रहे। इसके बाद शाहजहाँ ने अपना ध्यान बाजीपुर की ओर केंद्रित किया। इसी समय उसने मुग़ल एवं बीजापुर के मध्य अहमदनगर के विभाजन का प्रस्ताव रखा।

तदोपरांत 1636 ईसवी में मुग़लों एवं बीजापुर के मध्य संधि हुई। इस संधि के साथ दक्षिण पर भी मुग़लों का आधिपत्य हो गया। लेकिन मराठा सरदारों जैसे शाह जी एवं उनके बाद उनके पुत्र शिवाजी तथा गोलकुंडा के शासकों की महत्वाकांक्षाओं के कारण इस क्षेत्र में अव्यवस्था बनी रही। साथ ही, औरंगज़ेब की दक्कन के वायसराय के रूप में नियुक्ति ने दक्षिण की समस्या को और भी जटिल बना दिया।

जहाँगीर एवं शाहजहाँ के दौरान प्रशासन (Administration during Jahangir and Shah Jahan)

अकबर के द्वारा विकसित प्रशासन पद्धति एवं भू-राजस्व व्यवस्था अल्प परिवर्तनों के साथ, जहाँगीर एवं शाहजहाँ के शासनकाल में भी जारी रही। हालाँकि मनसबदारी व्यवस्था में कुछ बदलाव किए गए। जहाँगीर ने दु-अस्पाह, सिह-अस्पाह व्यवस्था (अर्थात् दो या तीन घोड़ों वाला सैनिक) आरंभ की, जिसके अंतर्गत कुछ चयनित सामंतों को, उनके जात पद में वृद्धि किए बिना, सैनिकों का एक बड़ा कोटा रखने की अनुमति दी जा सकती थी। शाहजहाँ के शासनकाल में रखे जाने वाले सैनिकों की संख्या घटाने हेतु इस व्यवस्था को पुनः संशोधित किया गया। सैनिकों की संख्या में यह कमी राजकोष पर विभिन्न वित्तीय संकटों के कारण की गई थी। इसने मुग़लों की अश्वसेना की दक्षता को अत्यधिक प्रभावित किया। इसके बावजूद, जहाँगीर के समय में व्यक्तिगत निगरानी तथा उच्च कुशल एवं योग्य वज़ीरों के कारण मनसबदारी व्यवस्था उचित रूप से कार्य करती रही।

औरंगज़ेब (Aurangzeb)

औरंगज़ेब

शाहजहाँ का अंतिम समय उसके पुत्रों के मध्य उत्तराधिकार के युद्धों का साक्षी था। अपने पिता एवं भाइयों के प्रति क्रूर दृष्टिकोण के कारण औरंगज़ेब गद्दी हासिल प्राप्त करने में सफल रहा। उसके शासनकाल में मुग़ल साम्राज्य अपने चरम पर पहुँच गया। उसका शासन उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में जिंजी (Jinji) तक तथा पश्चिम में हिंदुकुश से लेकर पूर्व में चटगाँव तक विस्तृत था।

औरंगज़ेब अपने विचारों से अत्यंत रूढ़िवादी था। उसने कई हिंदू मंदिरों को ध्वस्त किया, जिसकी वजह से हिंदुओं के बड़े भाग में असंतोष फैला। 1679 ईसवी में पुनः जजिया कर आरोपित करने से हिंदुओं के बीच और अधिक रोष व्याप्त हो गया। लेकिन उसके धार्मिक मतों को उसकी राजनीतिक नीतियों का आधार नहीं माना जा सकता।

हालाँकि औरंगजेब ने राजपूतों के साथ प्रगाढ़ संबंधों को महत्त्व दिया, परंतु मेवाड़ एवं मारवाड़ को उसने अपने अधीन करने की नीति अपनाई, जिससे उसके ने राजपूतों के साथ संबंध कमज़ोर हुए। वह जाटों, अफ़ग़ानों और सिक्खों के साथ भी विवादों में उलझा रहा, जिससे साम्राज्य पर काफ़ी दबाव पड़ा। औरंगज़ेब इन सभी क्रियाकलापों में अत्यंत व्यस्त रहा। इस स्थिति ने मराठा साम्राज्य के उदय के दौरान शिवाजी पर मुग़लों के दबाव को कम कर दिया।

1681 ईसवी में औरंगज़ेब ने दक्षिण में अभियान शुरू किए। वह बीजापुर एवं गोलकुंडा के ख़िलाफ़ सफलतापूर्वक विजयी हुआ।

उसने मराठों की ओर भी रुख किया, परंतु मराठा पराजित नहीं हुए। अंततः 1707 ईसवी में, मुग़ल साम्राज्य को अत्यंत अव्यवस्थित और आतंरिक समस्याओं से ग्रस्त अवस्था में छोड़कर औरंगज़ेब चल बसा।

1.2 उत्तर मुग़ल काल (Later Mughals)

1707 में औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् का समय निम्नलिखित विशेषताओं से जाना जाता है-

- कमज़ोर उत्तराधिकारी
- उत्तराधिकार युद्ध
- कुलीन (अभिजात/अमीर/सामंत) वर्ग की शक्ति में बढ़ोतरी। ये या तो शासक को सत्ता पर बिठाने में अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभाने लगे थे या इन्होंने अर्धस्वतंत्र या स्वतंत्र राज्यों की स्थापना कर ली थी।
- दरबारी षड्यंत्र
- धार्मिक सहिष्णुता
- बादशाह की शक्ति में कमी
- प्रभावी नियंत्रण क्षेत्र में कमी

बहादुर शाह-1 (Bahadur Shah-I)

बहादुर शाह-1

- उत्तराधिकार के युद्ध में बहादुर शाह-I विजयी हुआ तथा औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद शासक बना।
- उसने शांतिप्रिय नीति को बढ़ावा दिया।
- गुरु गोविंद सिंह के साथ उसने शांति स्थापित की, परंतु बाद में सिक्खों (जो बंदा बहादुर के नेतृत्व में विद्रोह कर रहे थे) के ख़िलाफ़ अभियान किए।
- उसके द्वारा किए गए जागीरों के अंधाधुंध वितरण के कारण राजकोष में अत्यंत गिरावट आई।

जहाँदार शाह (Jahandar Shah) (1712-13)

जहाँदार शाह

- जहाँदार शाह, ज़ुल्फ़िकार ख़ाँ की सहायता से शासक बना। शासक बनने के बाद जहाँदार शाह ने ज़ुल्फ़िकार ख़ाँ को अपना वज़ीर नियुक्त किया।
- इसके शासनकाल में प्रशासन ज़ुल्फ़िकार ख़ाँ के अधीन था।
- उसने भू-राजस्व की इजारा प्रथा (राजस्व ठेके की प्रथा) को बढ़ावा दिया। इससे किसानों का उत्पीड़न बढ़ा।
- सैयद बंधुओं की सहायता से फर्रुख़सियर ने इसे पराजित कर दिया और इसके शासन का अंत हुआ।

फर्रुख़सियर (Farrukh Siyar) (1713-19)

फर्रुख़सियर

- फर्रुख़सियर ने सैयद बंधुओं (जो साम्राज्य के प्रशासन में अत्यधिक प्रभावशाली हो रहे थे) के सहयोग से सत्ता प्राप्त की, मगर आगे चलकर वह सैयद बंधुओं के साथ ही सत्ता-संघर्ष में उलझ गया।
- 1719 ईसवी में सैयद बंधुओं ने ही इसकी हत्या कर दी।

सैयद बंधु (Saiyid Brothers)

सैयद बंधु

- अब्दुल्ला खान एवं हुसैन अली खान नामक दो भाई सैयद बंधुओं के नाम से प्रसिद्ध हुए।।
- राजा को अपनी मर्ज़ी से सिंहासनारूढ़ करने और सिंहासन से उतारने के कारण ये 'राजा बनाने वाले' (Kingmaker) के नाम से प्रसिद्ध हुए।
- प्रशासन में इनका प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया।
- उन्होंने साम्राज्य को विद्रोह एवं प्रशासनिक विघटन से बचाने का प्रयास किया, किंतु दरबारी षड्यंत्रों के कारण असफल रहे।

मुहम्मद शाह (Muhammad Shah)

मुहम्मद शाह

- मुहम्मद शाह ने प्रशासनिक काम-काज को नज़रअंदाज़ किया।
- वह स्वयं दरबारी षड्यंत्रों में शामिल रहा।
- उसके शासनकाल में नादिरशाह का आक्रमण हुआ।
- इसके शासनकाल में साम्राज्य के अंतर्गत प्रभावी नियंत्रण क्षेत्र में कमी आई।

अगले मुग़ल शासक अहमदशाह (1748-54) और आलमगीर-II (1754-59) अव्यवस्था को नियंत्रित करने में अत्यंत कमज़ोर थे। अहमदशाह अब्दाली के बारंबार आक्रमण, पंजाब पर अफ़ग़ानों के अधिकार एवं मराठों के विस्तार ने मुग़ल साम्राज्य को दिल्ली तक सीमित कर दिया था। इसके बाद मुग़लों ने या तो मराठों या अंग्रेज़ों की कठपुतली बनकर शासन किया।

शाह आलम-II ने 1759 ईसवी में गद्दी संभाली। 1764 ईसवी में उसने बंगाल के मीर क़ासिम एवं अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ मिलकर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ 'बक्सर का युद्ध' लड़ा। युद्ध में पराजय के पश्चात् हुई इलाहाबाद की संधि ने उसे ईस्ट इंडिया कंपनी (EIC) का पेंशनधारी बना दिया। 1772 ईसवी में वह मराठों के संरक्षण में दिल्ली लौट आया।

1803 ईसवी में अंग्रेज़ों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। 1858 तक अंग्रेज़ों ने मुग़ल साम्राज्य को काल्पनिक रूप से जीवित रखा और फिर अंतिम मुग़ल बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र को रंगून निर्वासित कर दिया। इसी के साथ औपचारिक रूप से मुग़ल साम्राज्य का अंत हो गया।

1.3 विदेशी आक्रमण (Foreign Invasions)

नादिरशाह का आक्रमण (Nadir Shah's Invasion)

आक्रमण के कारण (Causes of the Invasion)

नादिरशाह

1. **उत्तर-पश्चिमी सीमा की सुरक्षा में लापरवाही:** औरंगज़ेब उत्तर-पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए सतर्क था, परंतु 1707 के बाद काबुल एवं गजनी का प्रशासन शिथिल हो गया था। उदाहरणार्थ, सैनिकों को 5 वर्षों से वेतन नहीं दिया गया था।
2. **समझौते का उल्लंघन:** नादिरशाह ने मुग़ल सम्राट मुहम्मद शाह से भगोड़े अफ़ग़ानों को शरण न देने का समझौता किया था, परंतु मुग़लों ने इसका पालन नहीं किया।
3. **राजदूतों के साथ दुर्व्यवहार:** नादिरशाह द्वारा दिल्ली भेजे गए राजदूत पर मुग़ल सैनिकों ने हमला कर दिया। इसके साथ ही, मुग़लों ने फ़ारसी दरबार में राजदूत भेजने की प्रथा को भी समाप्त कर दिया था।
4. **संपत्ति की लालसा:** नादिरशाह भारत की अपार धन-संपदा के प्रति आकर्षित था।
5. **आमंत्रण:** भारत पर आक्रमण करने के लिए हिंदुस्तानी अमीरों द्वारा नादिरशाह को आमंत्रित किया गया था। इस आमंत्रण ने मुग़ल साम्राज्य में फैली अव्यवस्था को सुनिश्चित कर दिया।

परिणामतः नादिरशाह ने 1738 में भारत अभियान आरंभ किया और बिना किसी प्रतिरोध के लाहौर जीत लिया। पहले से सतर्क मुग़ल बादशाह ने निज़ाम-उल-मुल्क एवं सआदत खाँ के साथ मिलकर सेना संगठित करने की कोशिश की थी। परंतु कुशल रणनीति के अभाव एवं आपसी ईर्ष्या की वजह से मुग़ल सेनाओं को फरवरी 1739 में 'करनाल के युद्ध' में करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा।

नादिरशाह ने दिल्ली पर हमला करके इसे लूटा। उसकी लूट की राशि का आकलन कुल 70 करोड़ के लगभग किया गया। वह शाहजहाँ का रत्नजड़ित मयूर सिंहासन (तख्ते ताऊस) और सुप्रसिद्ध कोहिनूर हीरा भी अपने साथ ले गया।

नादिरशाह के आक्रमण के प्रभाव (Impact of Nadir Shah's Invasion)

1. वित्तीय क्षति के अतिरिक्त, नादिरशाह के आक्रमण ने मुग़लों की प्रतिष्ठा नष्ट कर दी। मराठों एवं अन्य विदेशी कंपनियों ने इसका भरपूर लाभ उठाया।
2. केंद्रीय प्रशासन क्षत-विक्षत हो गया।
3. शक्तिहीन सामंत वर्ग ने अपनी क्षतिपूर्ति किसानों से अतिरिक्त कर की वसूली करके की।
4. काबुल एवं पश्चिमी सिंधु क्षेत्र हाथ से निकल चले जाने से मुग़ल साम्राज्य पर उत्तर-पश्चिमी सीमाओं से आक्रमणों का ख़तरा बढ़ गया।

अहमदशाह अब्दाली का आक्रमण (Ahmed Shah Abdali's Invasions)

अहमदशाह अब्दाली

1747 ईसवी में नादिरशाह की हत्या करके अहमदशाह अब्दाली ने स्वयं को कंधार का सम्राट घोषित किया। जल्द ही, उसने अफ़ग़ानिस्तान में नया साम्राज्य स्थापित कर लिया। 1748 से 1767 तक उसने कई बार भारत पर आक्रमण किया। उसने मराठों को 1761 में पानीपत के तृतीय युद्ध में पराजित किया।

अब्दाली के आक्रमण के प्रभाव (Impact of Abdali's Invasions)

1. अब्दाली के आक्रमणों ने मुग़ल साम्राज्य के पतन की गति तीव्र कर दी।
2. बार-बार होने वाले आक्रमणों ने मुग़ल प्रशासन को पंगु बना दिया।
3. साम्राज्य पर वित्तीय संकट आ गया।
4. आक्रमण ने मुग़ल साम्राज्य को नियंत्रित करने की मराठा आकांक्षाओं पर पानी फेर दिया।
5. आक्रमण से उपजी अव्यवस्था से नई क्षेत्रीय शक्तियों, जैसे- सिक्ख, रुहेला आदि का उदय हुआ।

1.4 विश्लेषण (Analysis)

मुग़ल साम्राज्य के पतन के कारण (Causes of Decline of Mughal Empire)

औरंगज़ेब की नीतियाँ (Responsibility of Aurangzeb)

औरंगज़ेब के शासन में, मुग़ल साम्राज्य अपने क्षेत्रीय विस्तार के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था, परंतु यह प्रादेशिक विस्तार केंद्रीय प्रशासन के नियंत्रण से पृथक् ही रहा। उस दौरान संचार साधनों का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया था। अतः इस विस्तृत साम्राज्य को औरंगज़ेब के कमज़ोर उत्तराधिकारी नियंत्रित करने में असमर्थ रहे। औरंगज़ेब की धार्मिक नीतियों ने साम्राज्य में असंतोष बढ़ा दिया, जिसके फलस्वरूप सिक्खों, जाटों, बुंदेलों आदि ने विद्रोह कर दिया। दक्षिणी राज्यों एवं मराठों के ख़िलाफ़ उसकी कट्टर साम्राज्यवादी नीतियों ने साम्राज्य के संसाधनों का ह्रास किया।

कमज़ोर उत्तराधिकारी एवं कुलीन वर्ग (Weak-Successors and Nobles)

केंद्रीकृत मुग़ल साम्राज्य को एक शक्तिशाली शासक की आवश्यकता थी, लेकिन औरंगज़ेब के कमज़ोर उत्तराधिकारियों ने विलासिता को महत्त्व दिया और प्रशासन (राजकाज) को नज़रअंदाज़ किया, जिससे साम्राज्य की कमियाँ उजागर हुईं। सेना पर भी ध्यान न देने से साम्राज्य में विद्रोह बढ़े एवं मराठा जैसी क्षेत्रीय शक्तियाँ मज़बूत हो गईं। इन्हीं वजहों से बाहरी आक्रमण भी बढ़ गए, जिससे साम्राज्य के संसाधनों की लूट-मार अत्यधिक बढ़ गई।

सामंत वर्ग ने भी बादशाह को देखकर या तो विलासिता में जीवन व्यतीत करना आरंभ कर दिया या अपने स्वतंत्र राज्यों की स्थापना कर ली। उन्होंने उत्तराधिकार के युद्धों में अपने हितों के अनुसार अलग-अलग गुटों का समर्थन किया। इस उठा-पटक में सैयद बंधुओं ने तो किंगमेकर तक की भूमिका निभाई। इन गुटों की आपसी ईर्ष्या इतनी मज़बूत थी कि बाहरी आक्रमण के समय के समय भी ये एकजुट नहीं हो सके।

सैन्य कमज़ोरियाँ (Military Weaknesses)

सेना का संगठन सामंतवादी आधार पर होने के कारण इसकी कुछ सीमाएँ थीं। सैनिकों ने सम्राट/बादशाह की अपेक्षा मनसब को अधिक महत्त्व दिया। उत्तर मुग़ल काल में यह अव्यवस्था अधिक प्रभावी रही।

सेना में अनुशासन, एकजुटता एवं आधुनिक उपकरणों की कमी थी। मुग़ल सेना का युद्ध-प्रबंधन बोझिल हो गया था। सेना के अधिकारी प्रायः दल-बदली करते थे। वित्तीय संकट के कारण सैनिकों को कई बार वेतन नहीं दिया गया। ऐसी सेना, एकजुटता एवं राजनिष्ठा के बिना साम्राज्य के लिए नहीं लड़ सकती थी।

वित्तीय संकट (Financial Crisis)

औरंगज़ेब के दक्षिण अभियान ने राजकोष एवं व्यापार का ह्रास किया। निरंतर युद्धों ने फ़सलों को बर्बाद किया और किसानों को कृषि छोड़ने हेतु विवश किया। इसका राजस्व पर बुरा असर पड़ा।

उत्तर मुग़ल काल में यह समस्या और गंभीर हो गई। स्वतंत्र राज्यों के बनने से राजस्व में गिरावट आई। उत्तराधिकार युद्धों, सम्राटों एवं सामंत वर्ग की विलासिता के कारण राजकोष खाली हो गया। जागीर के रूप में वेतन भुगतान एवं बाहरी आक्रमणों का भी साम्राज्य के संसाधनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

मराठों का उदय (Rise of Marathas)

मराठा, मुग़ल साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख बाह्य कारण थे। पेशवाओं के द्वारा अपनाई गई हिंदू साम्राज्य की नीति केवल मुग़ल साम्राज्य के पतन के बाद ही सफल हो सकती थी।

मुग़ल साम्राज्य हिंदू-मुस्लिम एकता बनाए रखने में असफल रहा, जिसका मराठों ने लाभ उठाया। कई भारतीय शासक व उनके अनुयायी मुग़लों को विदेशी तथा भारत व हिंदुओं के शत्रु के रूप में देखते थे।

नादिरशाह एवं अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण (Invasions of Nadir Shah and Ahmed Shah Abdali)

इन आक्रमणों ने मुग़ल सेना की कमज़ोरियों को उजागर किया। इन आक्रांताओं ने साम्राज्य के वित्तीय संसाधनों को बुरी तरह लूटा।

यूरोपीय कंपनियाँ (European Companies)

मुग़ल साम्राज्य के मध्यकालीन चरित्र को प्रगतिशील एवं क्रियाशील यूरोपीय कंपनियों द्वारा चुनौती दी गई। सभ्यता के विकास में यूरोपियों ने भारतीयों को पीछे छोड़ दिया था।

मुग़ल शासन के प्रभाव (Impact of the Mughal Rule)

राजनीतिक (Political)

- तुर्कों द्वारा आरंभ की गई देश के राजनीतिक एकीकरण की प्रक्रिया मुग़लों के काल में आकर पूर्ण हुई।
- मुग़लों के द्वारा स्थापित प्रशासनिक व्यवस्था, जो मुख्यतः उत्तर भारत तक सीमित थी, ने देश के अन्य भागों को भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया।

- मुग़ल राजनीतिक व्यवस्था ने राज्य प्रशासन के कई नए संस्थानों का गठन किया, जैसे- दीवान-ए-आला।
- मुग़ल, उत्तर-पश्चिमी सीमा को 200 वर्षों तक सुरक्षित रखने में सफल रहे। हालाँकि इस सीमा का क्षरण भी उत्तर-मुग़ल काल में ही हुआ।
- जब तक मुग़ल साम्राज्य मज़बूत था, व्यापारिक कंपनियाँ अपनी क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में सफल नहीं हो सकी थीं।
- मुग़ल एक मज़बूत नौसेना नहीं बना पाए, जिसका लाभ कंपनियों को राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने में मिला।
- औरंगज़ेब के समय को छोड़कर, मुग़ल राजनीतिक व्यवस्था कमोबेश धर्मनिरपेक्ष रही। इससे देश में शांति एवं सहिष्णुता स्थापित करने में सहायता मिली।

सामाजिक (Social)

- धर्मनिरपेक्ष राज्य-व्यवस्था होने के कारण सामंजस्य एवं समरसता को बढ़ावा मिला।
- मुग़ल साम्राज्य में महिलाओं की दशा में सुधार तो नहीं हुआ, लेकिन पर्दा प्रथा जैसी कुप्रथाओं का विकास अवश्य हुआ।
- सामंत वर्ग के उदय से सामाजिक असमानता बढ़ी।
- इस्लाम की चुनौतियों के बावजूद जाति व्यवस्था पूर्ववर्ती स्वरूप में बनी रही।
- अकबर जैसे मुग़ल बादशाहों ने अधिक वैज्ञानिक विषयों को समाविष्ट करते हुए शिक्षा को आधुनिक बनाने का प्रयास किया, किंतु रूढ़िवादी तत्त्वों के दबाव से ये कदम सफल नहीं हो पाए।

मुग़ल काल का अधिकांश इतिहास राजाओं, बादशाहों, सामंतों आदि को आधार बनाकर लिखा गया। ऐसे में, आम लोगों पर मुग़ल शासन के वास्तविक प्रभावों का आकलन करना कठिन है।

आर्थिक (Economic)

- मुग़ल साम्राज्य में भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्यत: सामंतवाद पर आधारित थी, जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक असमानताएँ उत्पन्न हुईं और किसानों की दशा में भी अधिक सुधार नहीं हुआ।
- चाँदी के सिक्कों, सराय एवं सड़कों के निर्माण से व्यापार तथा हस्तशिल्प उद्योगों का विकास हुआ, परंतु नौसेना की कमी के कारण, भारत के लोग अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का लाभ नहीं ले सके।
- मुग़ल साम्राज्य में शांति स्थापना से कृषि में सहायता मिली, परंतु किसानों की दशा पहले की तरह लगभग ख़राब ही बनी रही।
- मुग़ल साम्राज्य ने नवाचार करने का प्रयास नहीं लिया, इसलिए उनकी अर्थव्यवस्था विज्ञान एवं तकनीक क्षेत्र में पिछड़ी रही।

मुग़ल साम्राज्य में एक सांस्कृतिक राज्य के तत्त्व भी शामिल थे। इसका प्रमुख कारण मुग़ल शासकों द्वारा विद्वानों के साथ-साथ कला एवं स्थापत्य को संरक्षण प्रदान करना था।

सांस्कृतिक (Cultural)

- मुग़लों ने शानदार किलों, महलों, दरवाज़ों, सार्वजनिक इमारतों मस्जिदों, सरायों आदि का निर्माण कराया। मुग़लकालीन स्थापत्य कला में मुख्यत: लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर का प्रयोग किया गया। चारबाग शैली एवं पित्रादूरा तकनीक को प्रयोग मुग़ल स्थापत्य कला के प्रमुख योगदान थे।
- मुग़लों का चित्रकला के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। मुख्यत: जहाँगीर के समय में चित्रकला के क्षेत्र में अद्वितीय प्रगति हुई। मुग़लकाल की चित्रकला क्षेत्रीय शैलियों, जैसे- राजस्थानी, पहाड़ी आदि से भी प्रभावित थी।
- मुग़ल शासकों ने कई विद्वानों को संरक्षण दिया, उदाहरणार्थ- अबुल फज़ल को अकबर द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया।
- मुग़ल काल में संगीत के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई। उदाहरण के लिए, अकबर ने ग्वालियर के तानसेन को संरक्षण दिया, जिन्होंने विभिन्न रागों की रचना की। मुग़ल काल में वाद्य यंत्रों का भी विकास हुआ।

यद्यपि औरंगज़ेब ने अपने दरबार में गायन पर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन वाद्य यंत्रों के वादन को प्रतिबंधित नहीं किया था। मुहम्मदशाह का शासनकाल (1719-48) भी संगीत के विकास हेतु जाना जाता है।

■■■■

? विगत् वर्षों की मुख्य परीक्षा के प्रश्न को हल कीजिए

1. स्पष्ट कीजिए कि अठारहवीं शताब्दी के मध्य में भारत किस प्रकार विखंडित राज्य व्यवस्था के भय से घिरा हुआ था। (2017)

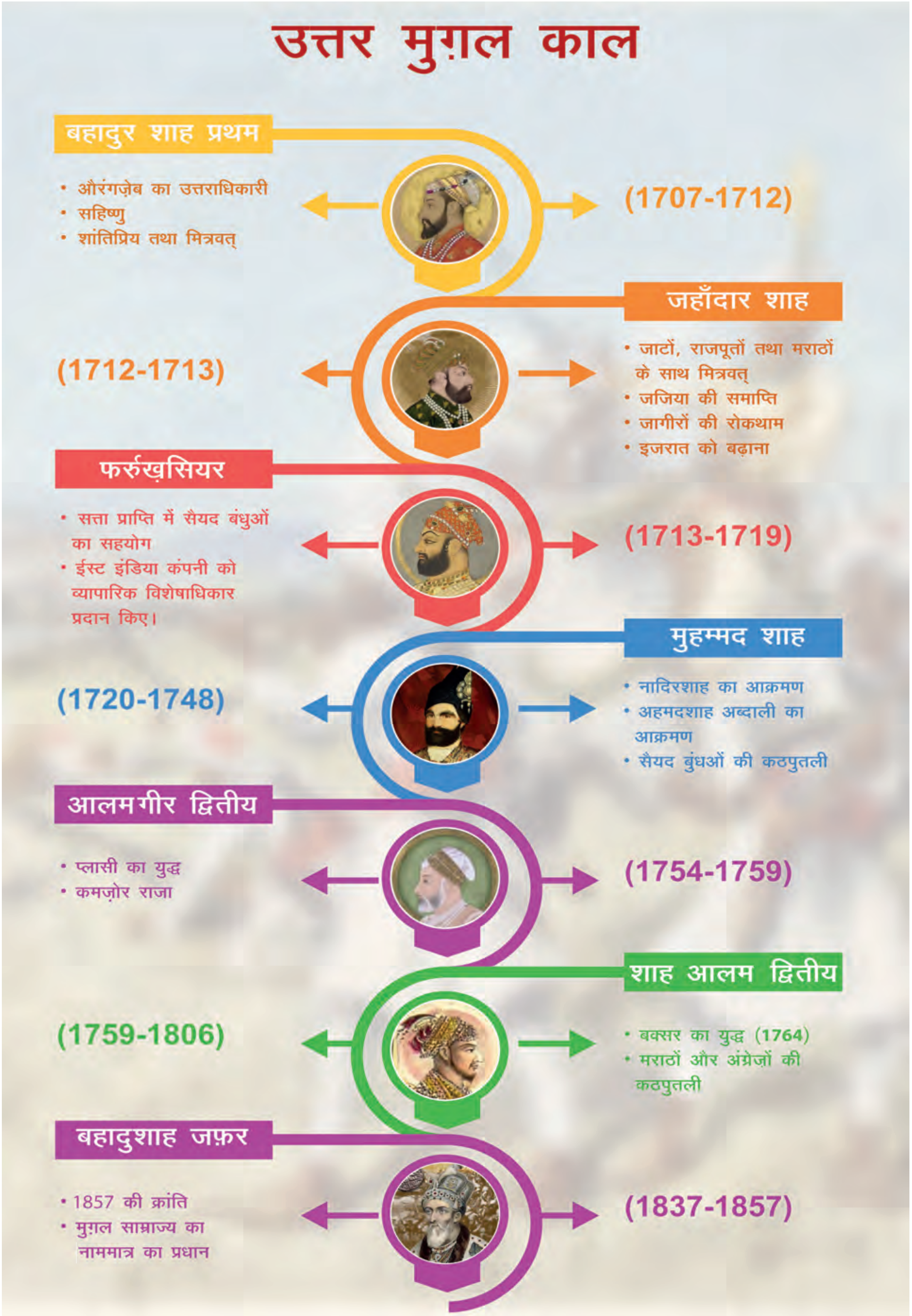
उत्तर मुग़ल काल
बहादुर शाह प्रथम
• औरंगज़ेब का उत्तराधिकारी
• सहिष्णु
• शांतिप्रिय तथा मित्रवत्
(1707-1712)
जहाँदार शाह
(1712-1713)
• जाटों, राजपूतों तथा मराठों के साथ मित्रवत्
• जजिया की समाप्ति
• जागीरों की रोकथाम
• इजरात को बढ़ाना
फर्रुख़सियर
• सत्ता प्राप्ति में सैयद बंधुओं का सहयोग
• ईस्ट इंडिया कंपनी को व्यापारिक विशेषाधिकार प्रदान किए।
(1713-1719)
मुहम्मद शाह
(1720-1748)
• नादिरशाह का आक्रमण
• अहमदशाह अब्दाली का आक्रमण
• सैयद बंधुओं की कठपुतली
आलमगीर द्वितीय
• प्लासी का युद्ध
• कमज़ोर राजा
(1754-1759)
शाह आलम द्वितीय
(1759-1806)
• बक्सर का युद्ध (1764)
• मराठों और अंग्रेज़ों की कठपुतली
बहादुशाह जफ़र
• 1857 की क्रांति
• मुग़ल साम्राज्य का नाममात्र का प्रधान
(1837-1857)

मुग़ल शासन के प्रभाव

01 राजनीतिक

- मुग़लों ने देश का राजनीतिक एकीकरण किया और राज्य का संस्थानीकरण किया।
- जब तक मुगल प्रभावशाली थे, उन्होंने देश की उत्तर–पश्चिमी सीमा को सुरक्षित रखा और यूरोपीय कंपनियों को क्षेत्रीय नियंत्रण प्राप्त करने से रोके रखा।

02 सामाजिक

- मुग़ल राज्य व्यापक तौर पर धर्मनिरपेक्ष थे।
- इनके शासन से महिलाओं की दशा सुधारने में सहायता नहीं मिली।
- इनके शासनकाल में पर्दा प्रथा का प्रसार हुआ।
- सामंतवाद को बढ़ावा मिला।
- सूफ़ी आंदोलन के बावजूद जाति प्रथा प्रभावी रही।
- रुढ़िवादी तत्त्वों ने शिक्षा के आधुनिकीकरण को रोके रखा।

03 आर्थिक

- भारतीय अर्थव्यवस्था सामंतवादी बनी रही।
- चाँदी के सिक्कों, सड़कों तथा सरायों आदि के निर्माण से व्यापार तथा हस्तशिल्प पर सीधा सकारात्मक प्रभाव पड़ा।
- कमज़ोर नौसेना के कारण अंतर्राष्ट्रीय व्यापार निम्न रहा।
- कृषि पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़े।
- नवोन्मेषन को प्रोत्साहन नहीं मिला, अतः विज्ञान तथा तकनीक पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

04 सांस्कृतिक

- मुग़लों ने कला तथा स्थापत्य को संरक्षण दिया।
- इन्होंने चार–बाग शैली, पित्रादूरा आदि को प्रारंभ किया।
- शानदार संरचनाएं बनाई गईं और मुख्यतः लाल बलुआ पत्थर तथा संगमरमर का उपयोग किया गया।
- इन्होंने चित्रकला को संरक्षण प्रदान किया, जिसका प्रभाव क्षेत्रीय शैलियों, जैसे– राजस्थानी शैली, पहाड़ी शैली आदि पर भी पड़ा।
- मुग़लों के बहुत से दरबारी कवि, संगीतकार भी थे।

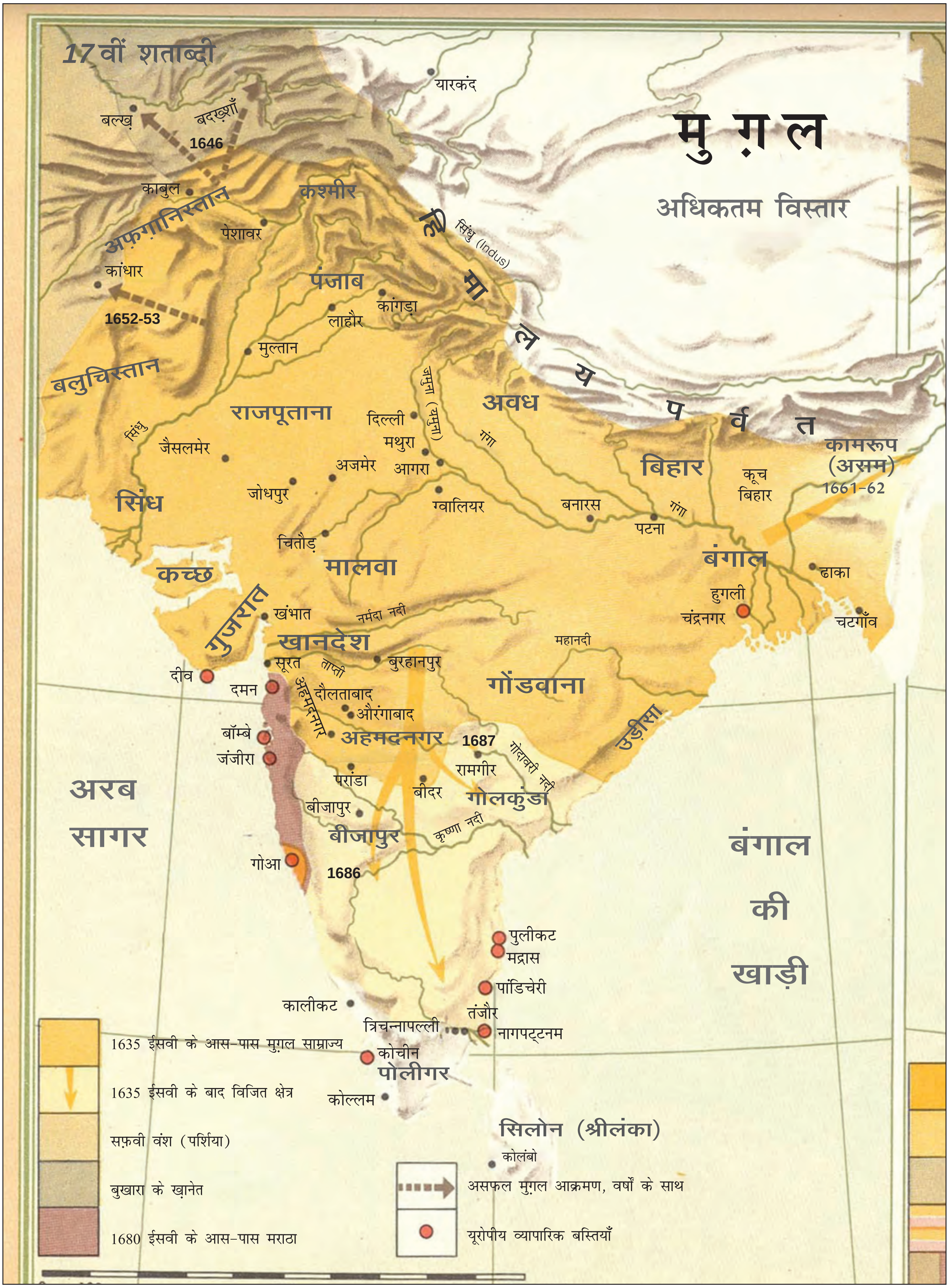
17 वीं शताब्दी
मु ग़ ल
अधिकतम विस्तार
यारकंद
बल्ख़
बदख़्शाँ
1646
काबुल
कश्मीर
अफ़ग़ानिस्तान
पेशावर
कांधार
पंजाब
कांगड़ा
लाहौर
1652-53
मुल्तान
बलुचिस्तान
हि मा ल य प र्व त
सिंधु (Indus)
अवध
राजपूताना
दिल्ली
मथुरा
जमुना (यमुना)
गंगा
सिंधु
जैसलमेर
अजमेर
आगरा
जोधपुर
सिंध
ग्वालियर
बनारस
बिहार
पटना
कूच बिहार
कामरूप (असम)
1661-62
चितौड़
मालवा
बंगाल
ढाका
कच्छ
गुजरात
खंभात
नर्मदा नदी
हुगली
चंद्रनगर
चटगाँव
खानदेश
महानदी
सूरत
ताप्ती
बुरहानपुर
दीव
दमन
दौलताबाद
औरंगाबाद
गोंडवाना
बॉम्बे
अहमदनगर
1687
उड़ीसा
जंजीरा
रामगीर
गोदावरी नदी
परांडा
बीदर
गोलकुंडा
अरब सागर
बीजापुर
कृष्णा नदी
गोआ
1686
बंगाल की खाड़ी
पुलीकट
मद्रास
पांडिचेरी
कालीकट
तंजौर
त्रिचनापल्ली
नागपट्टनम
कोचीन
पोलीगर
कोल्लम
सिलोन (श्रीलंका)
कोलंबो
1635 ईसवी के आस-पास मुग़ल साम्राज्य
1635 ईसवी के बाद विजित क्षेत्र
सफ़वी वंश (पर्शिया)
बुखारा के ख़ानेत
1680 ईसवी के आस-पास मराठा
असफल मुग़ल आक्रमण, वर्षों के साथ
यूरोपीय व्यापारिक बस्तियाँ

18वीं शताब्दी
1770 के आस-पास की स्थिति
यारकंद
काबुल
अफ़गानिस्तान
पेशावर
ग़ज़नी
कश्मीर
श्रीनगर
पंजाब
सिक्ख
कंधार
लाहौर
मुल्तान
लुधियाना
कलात
बहावलपुर
पानीपत
1761
दिल्ली
रोहिल खंड
अलीगढ़
अवध
जयपुर
जाट क्षेत्र
आगरा
कानपुर
ग्वालियर
जोधपुर
अजमेर
सिंध
उदयपुर
चित्तौड़
कच्छ
इलाहाबाद
बनारस
पटना
बुंदेलखंड
मालवा
मुर्शीदाबाद
प्लासी
ढाका
काठियावाड़
बड़ौदा
कलकत्ता (B)
चटगाँव
नर्मदा
गोंडवाना
उड़ीसा
सूरत
ताप्ती
नागपुर
महानदी
दीव (P)
दमन (P)
बसीन
बरार
बॉम्बे (B)
औरंगाबाद
सतारा
हैदराबाद
गोदावरी
1766
बीजापुर
कृष्णा
कोल्हापुर
मसूलीपट्टनम
गोआ (P)
अरब सागर
बंगाल की खाड़ी
मैसूर
मद्रास (B)
अर्कोट
कांजीवरम (B)
श्रीरंगपट्टनम
कन्नूर (D)
पांडिचेरी (F)
माहे (F)
कराईकल (F)
नागपट्टनम (D)
कोचीन
त्रिंकोमाली
सिलोन (D)
कैंडी
कोलंबो
काठमांडू
ल्हासा
भूटान
1765
ब्रह्मपुत्र
गंगा
पतन
सिंधु
यमुना
मुग़ल (दिल्ली)
मुग़ल (दिल्ली) वायसराय परंतु वस्तुतः स्वतंत्र
अफ़ग़ान आधिपत्य के क्षेत्र
ब्रिटिश क्षेत्र, अधिग्रहण के वर्ष सहित
हिंदू राजाओं के अंतर्गत क्षेत्र
अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण (1748-1767)
यूरोपीय व्यापारिक बस्तियाँ: P = पुर्तगाली, F = फ्रांसीसी,
B = ब्रिटिश, D = डच